सम्पादकीय
परम वंदनीया माताजी को दें जाग्रत् भाव संवेदनाओं की श्रद्धाञ्जलि 2

वृक्षारोपण मास
बृहद् वृक्षारोपण से हरीभरी हो रही है प्रकृति 3

बच्चों का व्यक्तित्व सँवार रही बाल संस्कार शालाओं से गद्गद है समाज 4

अमेठी में चलेंगे
'मेरा गाँव देव गाँव' एवं 'मेरा परिवार देव परिवार' अभियान 6

रक्षाबंधन पर्व
नारी सुरक्षा और सशक्तीकरण के प्रति निष्ठावान रहने के संकल्प दिलाये 8

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

E-mail: news@awgp.org

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

16 सितम्बर 2024

वर्ष : 37, अंक : 06

प्रकाशन स्थल : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार

प्रकाशन तिथि : 12 सितम्बर 2024

वार्षिक चंदा : ₹ 80/-

वार्षिक चंदा (विदेश) : ₹ 1000/-

प्रति अंक : ₹ 4/-

RNI-NO.38653/ 1980 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2024-26 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2024-26

।। ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।।

उस प्राणस्वरूप, दुःखनाशक, सुखस्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक, देवस्वरूप परमात्मा को हम अंतःकरण में धारण करें। वह परमात्मा हमें सन्मार्ग में प्रेरित करे।

विधेयात्मक चिन्तन की फलदायी परिणतियाँ

युगऋषि, वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य । (अखण्ड ज्योति मार्च सन् 1984)

व्यक्तित्व का आधार हैं विचार

जीवन की अन्यान्य बातों की अपेक्षा सोचने की प्रक्रिया पर सामान्यतः कम ध्यान दिया गया है, जबकि मानवीय सफलताओं, असफलताओं में उसका महत्त्वपूर्ण योगदान है। विचारणा की शुरूआत उन मान्यताओं अथवा धारणाओं से होती है, जिन्हें या तो मनुष्य स्वयं बनाता है अथवा किन्हीं दूसरे से ग्रहण करता है। यह मान्यताएँ और धारणाएँ पढ़ने, सुनने और अन्यान्य अनुभवों के आधार पर भी बनती हैं।

मनुष्य अपनी अभिरुचि के अनुरूप विचारों को अपने मस्तिष्क में प्रविष्ट होने देता है, जबकि जिन्हें वह पसन्द नहीं करता, उन्हें निरस्त भी कर सकता है। जिन विचारों का वह चयन करता है, उन्हीं के अनुरूप चिन्तन की प्रक्रिया भी चलती है। चयन किये गये विचारों के अनुरूप ही दृष्टिकोण का विकास होता है, जो विश्वास को जन्म देता है। वही विश्वास परिपक्व होकर धारणा बन जाता है। व्यक्तियों की प्रकृति एवं अभिरुचि की भिन्नता के कारण मनुष्य-मनुष्य के विश्वासों, मान्यताओं एवं धारणाओं में भारी अन्तर पाया जाता है।

चिन्तन पद्धति में अर्जित की गयी भली-बुरी आदतों की भी भूमिका होती है। स्वभाव चिन्तन को अपने ढर्रे में घुमा भर देने में समर्थ हो जाता है। स्वस्थ और उपयोगी चिन्तन के लिए उस स्वभावगत ढर्रे को भी तोड़ना आवश्यक है, जो मानवीय गरिमा के प्रतिकूल है अथवा आत्मविकास में बाधक है।

विधेयात्मक चिंतन एक साधना है

प्रायः अधिकांश व्यक्तियों का ऐसा विश्वास है कि विशिष्ट परिस्थिति में मन द्वारा विशेष प्रकार की प्रतिक्रिया व्यक्त करना मानवीय प्रकृति का स्वभाव है, पर वास्तविकता ऐसी है नहीं। अभ्यास द्वारा उस ढर्रे को तोड़ना हर किसी के लिए सम्भव है। परिस्थिति विशेष में लोग प्रायः जिस ढंग से सोचने एवं दृष्टिकोण अपनाते हैं, उससे भिन्न स्तर का चिन्तन करने के लिए भी अपने मन को अभ्यस्त किया जा सकता है। मानसिक विकास के लिए अभीष्ट दिशा में सोचने के लिए अपनी प्रकृति को मोड़ा भी जा सकता है।

मन विभिन्न प्रकार के विचारों को ग्रहण करता है, पर जिनमें उसकी अभिरुचि रहती है, चयन उन्हीं का करता है। यह रुचि पूर्वानुभवों के आधार पर बनी हो सकती है। प्रयत्नपूर्वक नयी अभिरुचियाँ भी पैदा की जा सकती हैं।

प्रायः मन एक विशेष प्रकार की ढर्रे वाली प्रतिक्रियाएँ मात्र दर्शाता है, पर इच्छित दिशा में उसे कार्य करने के लिए नियंत्रित और विवश भी किया जा सकता है। बन्दरों की तरह उछल-कूद मचाना मन का स्वभाव है। वह एक दिशा अथवा विचार विशेष पर एकाग्र नहीं होना चाहता। नवीन विचारों की ओर आकर्षित तो होता है, पर उपयोगी होते हुए भी उन पर टिका नहीं रह पाता। कुछ ही समय बाद उसकी एकाग्रता भंग हो जाती है तथा वह परिवर्तन चाहने लगता है, पर अभ्यास एवं नियन्त्रण द्वारा उसके बन्दर-स्वभाव को बदला भी जा सकता है। यह प्रक्रिया समय साध्य होते हुए भी असम्भव नहीं है। एक बार एकाग्रता का अभ्यास बन जाने से जीवनपर्यन्त लाभकारी सिद्ध होता है।

सोचने की प्रक्रिया में विषयों पर एकाग्रता ही नहीं, स्वस्थ और सही दृष्टिकोण का होना भी आवश्यक है। किसी भी विषय पर दो प्रकार से सोचा जा सकता है-विधेयात्मक भी, निषेधात्मक भी। एकाग्रता का अभ्यास परस्पर विरोधी दोनों ही दिशाओं में किया जा सकता है। इस महत्त्वपूर्ण तथ्य को हर व्यक्ति जानता है कि निषेधात्मक चिन्तन से मनुष्य की वैचारिक क्षमताओं का ह्रास होता है और विधेयात्मक दृष्टिकोण से ही चिन्तन का सही लाभ लिया जा सकता है।

निषेधात्मक चिन्तन से बचने का एक तरीका यह भी हो सकता है कि अपनी गरिमा पर विचार करते रहा जाए तथा यह अनुभव किया जाए कि ''मानव जीवन एक महान उपलब्धि है, जिसका उपयोग श्रेष्ठ कार्यों में होना चाहिए। निकृष्ट चिन्तन मनुष्य को उसकी गरिमामय स्थिति से गिराता है।'' यह विश्वास जितना सुदृढ़ होता चला जाएगा, विधेयात्मक चिन्तन को उतना ही अधिक अवसर मिलेगा।

पूर्वाग्रहों से बचें

पूर्वाग्रहों से ग्रसित होने पर भी सही चिन्तन बन नहीं पड़ता। किसी विचारक का यह कथन शत-प्रतिशत सच है कि ''जो जितना पूर्वाग्रही होगा, वह चिन्तन की दृष्टि से उतना ही पिछड़ा होगा।''

इस परिवर्तनशील संसार में मान्यताओं एवं तथ्यों के बदलते देरी नहीं लगती। अतएव मन-मस्तिष्क को सदा खुला रखना चाहिए, ताकि यथार्थता से वंचित न रहना पड़े। खुले मन से हर औचित्य को बिना किसी ननुनच के स्वीकार करने के लिए तैयार रहना चाहिए। तथ्यों की ओर से आँखें बन्द रखने पर कितनी ही जीवनोपयोगी बातों से वंचित रह जाना पड़ता है।

किसी विषय पर एकाँगी चिन्तन भी सही निष्कर्षों पर नहीं पहुँचने देता। उस चिन्तन में मनुष्य की पूर्व मान्यताओं का भी योगदान होता है। सही विचारणा के लिए यह भी आवश्यक है कि अपनी पूर्व मान्यताओं, आग्रहों तथा धारणाओं का भी गम्भीरता से पक्षपातरहित होकर विश्लेषण किया जाए। पक्ष और विपक्ष दोनों पर ही सोचा जाए। किसी विषय पर एक तरह से सोचने की अपेक्षा विभिन्न पक्षों को ध्यान में रखकर चिन्तन किया जाए। स्वस्थ और यथार्थ चिन्तन तभी बन पड़ता है। एकांगी मान्यताओं एवं पूर्वाग्रहों को तोड़ना सम्भव हो सके तो सर्वांगीण प्रगति का मार्ग प्रशस्त हो सकता है।

सोच सतही नहीं, गहरी हो

विचारों का सही विश्लेषण सतही स्तर पर कर सकना सम्भव नहीं है। घटना अथवा विषय विशेष की परिस्थिति की गहराई में जाये बिना विचारणा के निष्कर्ष भी अधूरे, एकांगी और कभी-कभी गलत होते हैं। उल्लेखनीय बात यह भी है कि **विचारों के विश्लेषण की सही प्रक्रिया अपने ही बलबूते सम्पन्न की जा सकती है, न कि दूसरे के सहयोग से। सामयिक रूप से कोई वैचारिक सहयोग, सुझाव एवं परामर्श दे भी सकता है, पर हर क्षण अपने विचारों का निरीक्षण मात्र मनुष्य स्वयं ही कर सकता है।** सही ढंग से उचित-अनुचित का विश्लेषण एवं चयन भी वही कर सकता है। कहा जा चुका है कि विचारणा में पूर्व अनुभवों एवं आदतों की भी पृष्ठभूमि होती है। इस तथ्य से दूसरे व्यक्ति परिचित नहीं होते। अपनी वैचारिक पृष्ठभूमि हर व्यक्ति थोड़े प्रयत्नों से स्वयं पता लगाकर उसमें आवश्यक हेर-फेर कर सकता है। आत्म विश्लेषण के लिए मन एवं उसकी प्रवृत्तियों को विवेक के नेत्रों से देखना पड़ता है। कठिन होते हुए भी यह कार्य असम्भव नहीं है।

क्या उचित है और क्या अनुचित? कौन-सा कार्य औचित्यपूर्ण है, कौन-सा अनौचित्य से भरा? इसका पता लगाना असम्भव नहीं है। हर कोई थोड़े प्रयास से इसमें अपने को दक्ष कर सकता है।

> "जो जैसा सोचता है, करता है, वह वैसा ही हो जाता है।"
> – पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी

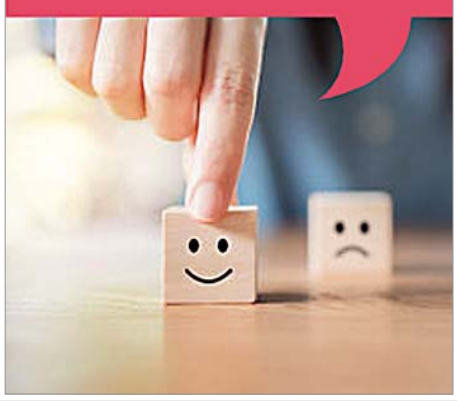

एकाग्रता के उत्कृष्ट परिणाम

एक समय में एक से अधिक विषयों पर चिन्तन करने से भी उथले परिणाम हाथ लगते हैं। एकाग्रता न बन पाने से विषय की गहराई में जाना सम्भव नहीं हो पाता। एक से अधिक विषयों पर एक साथ विचार करने से विचारों में भटकाव आता है, ऐसे में किसी उपयोगी परिणाम की आशा नहीं रहती। कई बातों में विचारों को भटकने देने की खुली छूट देने की अपेक्षा उपयोगी यह है कि एक समय में एक विषय पर सोचा जाए और जितना सोचा जाए, पूरे मनोयोगपूर्वक सोचा जाए। मनीषी, विचारक, वैज्ञानिक, कलाकार, साहित्यकार समाज को कुछ महत्त्वपूर्ण इसीलिए दे पाते हैं कि वे अपने विचारों को भटकने-बिखरने नहीं देते, एक ही विषय के इर्द-गिर्द पूरी तन्मयता के साथ उन्हें घूमने देते हैं। उनके विचारों की सार्थक परिणति भी इसीलिए होती है।

कर्म, विचारों के गर्भ में ही पकते हैं। जैसे भी विचार होंगे, उसी ढंग की गतिविधि मनुष्य अपनायेगा। जो प्रयास को सफल, उपयोगी और कल्याणकारी बनाना चाहते हैं, उन्हें सर्वप्रथम अपनी विचारणा की प्रक्रिया से अवगत होना चाहिए। अनुपयोगी एवं निषेधात्मक चिंतन को सुधारने, बदलने तथा उपयोगी विचारों को बिना किसी असमंजस के स्वीकारने के लिए सतत तैयार रहना चाहिए।

परम वंदनीया माताजी को दें जाग्रत् भाव संवेदनाओं की श्रद्धाञ्जलि

यह लोकमंगल के साथ आत्मविकास का एक अनिवार्य और सर्वोत्कृष्ट आयाम है

ईश्वर कहाँ है? कैसा है?

अध्यात्म के अन्वेषी युवक नरेन्द्र (बाद में स्वामी विवेकानन्द) में आत्मा और परमात्मा को जानने की अथाह जिज्ञासा थी। उन्होंने स्वामी रामकृष्ण परमहंस जी से पूछा, ''महाशय! क्या आपने ईश्वर को देखा है?'' स्वामी जी ने उत्तर दिया, ''हाँ, मैंने ईश्वर को देखा है और तुम्हें दिखा भी सकता हूँ।''

नरेन्द्र की आँखों में चमक आ गई। उन्होंने यह प्रश्न अनेक लोगों से किया था, लेकिन संतोषजनक और उत्तर उन्हें पहली बार मिला था। उन्होंने स्वामी जी से ईश्वर के दर्शन कराने का अनुरोध किया। स्वामी रामकृष्ण परमहंस ने उन्हें अगले दिन एक निर्जन स्थान पर साथ चलने के लिए कहा।

अगले दिन दोनों निर्धारित स्थान पर पहुँचे। निर्जन वन में एक झोंपड़ी थी। स्वामी रामकृष्ण परमहंस ने नरेन्द्र को द्वार पर ठहरने को कहा और स्वयं भीतर पहुँचे। वहाँ एक कुष्ठ रोगी चारपाई पर लेटा था। स्वामी रामकृष्ण परमहंस ने उसकी कुशलक्षेम पूछी, उसके घाव साफ किये, घावों पर मरहम लगाया और पट्टी की। उन्होंने कुष्ठ रोगी की कुटिया साफ की और उसे भोजन भी कराया। सारा काम समाप्त कर वे लौटने लगे।

नरेन्द्र यह सब बड़ी जिज्ञासा के साथ देख रहे थे, किन्तु मन में ईश्वर के दर्शन का उत्साह भी कम नहीं था। कुटिया से स्वामी जी के लौटने पर उन्होंने अपने प्रयोजन की याद दिलाई। स्वामी जी ने कहा, ''नरेन्द्र! उस दरिद्रनारायण के रूप में ईश्वर की सेवा ही तो कर रहा था। सृष्टि के कण-कण में, प्राणिमात्र में ईश चेतना का वास है। हमें उन्हें उसी भाव के साथ देखना चाहिए। दीन, दुःखियों और पीड़ितों की सेवा-सहायता ही ईश्वर की सच्ची सेवा है।''

परम पूज्य गुरुदेव के संदर्भ में

परम पूज्य गुरुदेव की सिद्धियों से प्रभावित लोग अक्सर उनसे पूछा करते थे, ''गुरुदेव! आप कौन-सा मंत्र जपते हैं?'' इस प्रश्न का उत्तर देते हुए पूज्य गुरुदेव ने लिखा है, ''मैं जपता तो वही गायत्री मंत्र हूँ, जो तुम्हें बताता हूँ, किन्तु उस जुबान से नहीं जपता जिससे अक्सर लोग जपा करते हैं।'' हम सब जानते हैं कि परम पूज्य गुरुदेव ने अपनी किशोरावस्था से ही आहार और वाणी का कितना प्रचण्ड संयम किया था। केवल जप, तप नहीं, व्यक्तित्व परिष्कार की साधनाओं से ही मनुष्य में देवत्व का उदय संभव हो पाता है। व्यक्तित्व परिष्कार की इन साधनाओं में सेवा का स्थान सर्वोपरि माना जाता है।

परम पूज्य गुरुदेव एवं अन्य संत, महात्मा, महापुरुषों की महानता के दर्शन करने हों, तो उनके अंतःकरण को टटोलना चाहिए। उनके अंतःकरण में प्रेम, करुणा, सेवा, संवेदना का सागर भरा दिखाई देगा। जब यह संवेदना का झरना फूटता है, तब तमाम सामाजिक प्रतिबंधों की परवाह किए बिना बालक श्रीराम हरिजन माता छपको की सेवा करने निकल पड़ते हैं और बूढ़े बैल को कसाई के कब्जे से बचाने के लिए स्वयं उसकी जगह गाड़ी में लग जाया करते हैं। असह्य वेदना के समय जब कोई निकट आने के लिए तैयार नहीं था, तब बालक श्रीराम ने छपको की जो सेवा की, उससे वे अभिभूत हो गईं। वे जब तक जिंदा रहीं, तब तक यही कहती रहीं, ''मैंने त्रेतायुग के भगवान राम को तो नहीं देखा, किन्तु इस युग में श्रीराम के रूप में उनके दर्शन किए हैं।''

सेवा से संवेदना जागती है और जाग्रत् संवेदनाएँ ही व्यक्ति को महानता के पथ पर अग्रसर किया करती हैं। इसके विपरीत यह भी कहा जा सकता है कि जैसे-जैसे मानव में देवत्व का विकास होता जाता है, वैसे-वैसे उसके अंतःकरण में जाग्रत् संवेदनाएँ उसे सेवा के लिए प्रेरित करती हैं।

सेवा-सहायता से लोकमंगल का प्रयोजन तो सधता ही है, इससे व्यक्तित्व भी निर्मल और परिष्कृत होता जाता है। सेवा प्रारब्ध एवं संचित कर्मों के प्रभाव को दूर करने का अचूक उपाय तथा उत्तम प्रायश्चित्त कर्म माना जाता है। पीड़ित मानवता की वेदना की अनुभूतियों से ही अंतःकरण में दया, करुणा, स्नेह, संवेदना, सहृदयता का जागरण और विकास होता है। यही कारण है कि लोकमान्य तिलक के परामर्श से मोहनदास करमचंद गाँधी ने स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भागीदारी के आरंभिक दिनों में भारत भ्रमण किया, जिससे वे महात्मा बन गए।

लोग पीड़ित मानवता के लिए धन आदि का दान करते हैं। इसका भी अपना प्रभाव व पुण्य है, लेकिन अंतःकरण में सही मायनों में देवत्व का जागरण तभी संभव है, जब पीड़ितों की वेदना की अनुभूति हो। इसके लिए प्रत्यक्ष सेवा जरूरी हो जाती है।

एक मार्मिक दृष्टांत

सेवा से मिले सुख और आनन्द की अनुभूतियाँ अनेक लोगों को होती हैं। उज्जैन, मध्य प्रदेश के निवासी श्री शरद निर्वाड़कर जी से जुड़ी ऐसी ही एक मार्मिक घटना है। वे अक्सर गरीबों की सहायता के लिए रात को निकल पड़ते थे। सर्दियों में ठिठुरते बेसहाराओं को व्यक्तिगत खर्च से कंबल ओढ़ाते थे। सावन के महीने में वे अक्सर 100-200 रुपये के पूड़ी-सब्जी के पैकेट खरीदकर सड़क के किनारे गरीबों में बाँटते थे।

एक बार वे पूड़ी के पैकेट बाँटने निकले। अंतिम पैकेट बचा था। उन्होंने देखा कि रोड के डिवाइडर में एक मैला-कुचैला अचेत-सा व्यक्ति पड़ा था, जिसका मुँह खुला था। आवाज लगाई, पर उसे सुध नहीं आई। झकझोरा, पर जागा नहीं। अंत में तेज आवाज के साथ उसे झकझोरा, भोजन का पैकेट दिया। उसने भोजन किया और भोजन करते-करते आँखों से आँसू की धार बह निकली। श्री निर्वाड़कर जी सकपका गए, पूछा, ''बाबा, क्या हो गया?''

वह व्यक्ति बोला, ''साहब! दो दिन से कुछ भी खाने को नहीं मिला, केवल पानी ही पिया है। मैंने सोच लिया था कि अब तो भगवान ही मदद कर सकता है। बाबूजी! आपके रूप में भगवान ही आए हैं।'' उसके इन शब्दों ने निर्वाड़कर जी को भावविभोर कर दिया।

सेवा का संतोष और आनन्द शब्दों में व्यक्त करना कठिन है, यह अनुभव की बात है। यह आनन्द अपार धन-वैभव के सुख से कहीं बढ़कर होता है। जिन्होंने भी इस मार्ग पर कदम रखा है, उसे आत्मसंतोष, लोकसम्मान तथा दैवी अनुग्रह के अपार अनुदान प्राप्त हुए हैं।

पीड़ा और पतन निवारण

गीता और विभिन्न शास्त्रों ने सत्य ही कहा है कि ज्ञान से बढ़कर इस संसार में कुछ भी नहीं है, जो जीवन-मुक्ति का पथ प्रशस्त करता है। लेकिन यह भी सत्य है कि 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' की भावना के साथ सबके उत्थान की और सबके कल्याण की कामना, जीवमात्र के प्रति करुणा, सेवा जैसे दिव्य गुण इस पथ के सोपान हैं। बीमारी, वृद्धावस्था और मृत्यु की वेदना के दृश्यों ने राजकुमार सिद्धार्थ को सांसारिक पीड़ाओं के निवारण और जीवन-मुक्ति के उपाय खोजने के लिए ज्ञान साधना की ओर प्रेरित किया। प्रचण्ड तप से उन्हें दिव्य ज्ञान हुआ, वे भगवान बुद्ध बन गए। ज्ञान प्राप्ति के पश्चात् बुद्ध ने दुनिया को करुणा और सेवा का पाठ ही तो पढ़ाया था।

यह सच है कि परम पूज्य गुरुदेव ने पीड़ा निवारण की अपेक्षा **पतन निवारण** को प्रधानता दी है। उन्होंने 'विचार क्रान्ति अभियान' के माध्यम से घर-घर सद्विचारों की प्रतिष्ठा को ही आज का सबसे बड़ा युगधर्म कहा है। पीड़ा निवारण का कार्य आसान है, अनेक समर्थ महानुभाव एवं संस्थाएँ इस कार्य में संलग्न हैं। प्रायः सभी संत, महात्मा पुण्य लाभ के लिए जरूरतमंदों की सेवा की प्रेरणा देते हैं। लेकिन परम पूज्य गुरुदेव ने पतन की उन जड़ों को काटने के लिए सद्ज्ञान के विस्तार की प्रेरणा दी है, जिनके कारण तमाम तरह की कष्ट-कठिनाइयाँ जन्म लेती हैं और समाज को असह्य वेदनाएँ झेलनी पड़ती हैं। आज के युग में अनेक सामाजिक समस्याओं की जड़ मूढ़ मान्यताएँ, अन्ध विश्वास, कुरीतियाँ, दकियानूसी परम्पराएँ हैं। बीमारियों का बड़ा कारण अपथ्य और असंयमित जीवन है। इस सबका समाधान तो विचारों के परिष्कार और विवेक के जागरण से ही संभव है, जिसके लिए गायत्री परिवार ज्ञानयज्ञ अभियान चला रहा है।

ज्ञानयज्ञ आज का सबसे बड़ा युगधर्म है, लेकिन पीड़ा निवारण की आवश्यकता को भी हमें समझना चाहिए। हमें भगवान बुद्ध के उस दृष्टांत का स्मरण अवश्य करना चाहिए, जिसमें उनके शिष्यों ने एक भिक्षु को उपदेश देना चाहा, लेकिन वह कुछ सुनने को ही तैयार नहीं था। जब शिष्यों ने भगवान बुद्ध को यह बात बताई, तो उन्होंने उस भिक्षु को बुलाया और उसे भोजन कराया। भिक्षु तृप्त हुआ, फिर उसने उपदेश भी सुना।

युगऋषि के अमृततुल्य ज्ञान को लोगों तक पहुँचाना हो तो केवल उपदेश ही पर्याप्त नहीं हो जाते, जनमानस में अपनी सदाशयता और परमार्थपरायणता के प्रति विश्वास भी जगाना होगा। भगवान बुद्ध के दृष्टांत की भाँति जब हम लोगों की सहायता के लिए आगे बढ़ेंगे, तभी उनका विश्वास हासिल कर सकेंगे। आत्मीयता विस्तार का यह सूत्र हमारे विचार क्रान्ति अभियान को भी प्रभावशाली बना देगा।

प. वंदनीया माताजी की जन्मशताब्दी

सन् 2026 अखण्ड ज्योति के प्राकट्य की शताब्दी के साथ परम वंदनीया माताजी का जन्मशताब्दी वर्ष है। अखण्ड ज्योति ज्ञान क्रान्ति की प्रतीक है, वहीं शक्तिस्वरूपा परम वंदनीया माताजी का जीवन श्रद्धा, संवेदना, सेवा, समर्पण, संकल्प, साहस, परमार्थपरायणता से ओतप्रोत रहा है। अस्तु, सन् 2026 में शताब्दी वर्ष मनाने की सार्थकता सद्ज्ञान एवं संवेदनाओं के क्रान्तिकारी विस्तार में ही है।

जन्मशताब्दी वर्ष के निमित्त कार्यक्रम आरंभ हो गए हैं। ज्योति कलश यात्राओं के माध्यम से भारत ही नहीं, पूरे विश्व में सोतों को जगाने, जागों को चलाने, चलतों को दौड़ाने के प्रयासों में लाखों कार्यकर्त्ता जुट गए हैं। आवश्यकता लक्ष्य के पुनर्बोध की है। परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी के विराट व्यक्तित्व को समझकर उनके द्वारा अपनाए गए सूत्र और आदर्शों को चरितार्थ करने की है।

स्नेहसलिला परम वंदनीया माताजी से जो भी मिलता, वह यही अनुभव करता था कि मात्र कुछ ही पलों में माताजी से जो प्रेम मिला, वैसा प्रेम तो उन्हें अपने सगे-संबंधियों से भी नहीं मिला। माताजी ने सदैव दूसरों का मनोबल बढ़ाया है। व्यथित और परेशान लोग अपनी समस्याएँ लेकर माताजी के पास आते थे और उनके समाधान, अनुदान पाकर चेहरे पर अथाह संतोष और मुस्कराहट लेकर लौटते थे। शान्तिकुञ्ज में आज भी स्नेहसलिला शैल जीजी की आत्मीयता और संवेदनाएँ उन्हीं के दिव्य प्रेम की अनुभूतियाँ कराती हैं। हम समाज में सेवा, करुणा, संवेदना, सद्भावों की यह गंगा प्रवाहित कर सके तो यह परम वंदनीया माताजी के प्रति उनकी जन्मशताब्दी में हमारी सच्ची श्रद्धाञ्जलि होगी, हमारे विचार क्रान्ति अभियान को भी सबल आधार मिलेगा।

अनुभव और आवश्यकताएँ

अखिल विश्व गायत्री परिवार पीड़ित मानवता की सेवा में सदैव अग्रणी रहा है। बाढ़, भूकम्प, तूफान, भूस्खलन, आगजनी जैसी आपदाओं में हमारी आपदा वाहिनियाँ अविलम्ब पहुँचकर जरूरतमंदों की सेवा में जुट जाती हैं। कोविड-19 के समय जरूरतमंदों को भोजन कराने के लिए प्रायः पूरे देश की गायत्री परिवार शाखाओं ने अद्वितीय योगदान दिया है। उन दिनों कोरोना के संक्रमण को रोकने के लिए नगर-नगर यज्ञ अभियान चलाया गया। नियमित रूप से चिकित्सा और रक्तदान शिविर लगाए जा रहे हैं। बंदियों के उत्कर्ष के लिए कारागारों में पहुँचकर शिविर, संगोष्ठियों का आयोजन किया जा रहा है। इन सब सेवाकार्यों के सुखद अनुभव और सत्परिणाम हमें मिले हैं।

आवश्यकता है कि युग निर्माण आन्दोलन से जुड़ा हर परिजन, कार्यकर्त्ता प्रत्यक्ष रूप से यथा संभव अधिकाधिक सेवाकार्यों से जुड़े। इससे उन्हें पावन गुरुसत्ता के सतयुगी संकल्पों को पूरा करने में भागीदारी का पुण्य, श्रेय, सौभाग्य तो मिलेगा ही, आत्मिक विकास भी तेजी से होगा। जहाँ भी संभव हो, पिछड़ों को आगे बढ़ाने में, गिरतों को ऊँचा उठाने में, जरूरतमंदों की सहायता करने में, भटकों को राह दिखाने में हमें अपना सहयोग देना ही चाहिए।

समाज में सेवा-सहायता के अनगिनत आयाम हैं। व्यक्तिगत रूप से और सामूहिक रूप से पीड़ित मानवता के लाभार्थ सक्रियता अपनाई जा सकती है।

व्यक्तिगत रूप से हमारी बाल संस्कार शालाएँ सेवा का शानदार माध्यम हैं। आज समाज में वृद्धों की उपेक्षा हो रही है तथा नारी उत्कर्ष एवं उनके संरक्षण-सुरक्षा की आवश्यकता सर्वविदित है। पिछड़े और गरीबों को आगे बढ़ने का अवसर मिले तो वे भी समाज के उत्कर्ष में शानदार योगदान दे सकते हैं।

इन दिनों राजनीतिक स्वार्थ से समाज में घृणा और वैमनस्य का वातावरण बढ़ता ही जा रहा है। देश की अखण्डता पर आघात करने के लिए तरह-तरह के षड़यंत्र हो रहे हैं। विश्व में युद्धों के नए-नए मोर्चे खुल रहे हैं। हम इन सब अवांछनीयताओं के शमन के लिए प्रत्यक्ष रूप से कुछ न कर सकें तो सामूहिक जप/प्रार्थना से वातावरण के अनुकूलन में योगदान तो दे ही सकते हैं।

संगठित प्रयासों से बेहतर सफलता मिलती है। परस्पर चर्चा और सहयोग से योजना बनाएँ और सक्रियता बढ़ायें। जो कर रहे हैं, उसकी सूचना अपने गुरुद्वारे शान्तिकुञ्ज को दें, ताकि यहाँ से आवश्यक शक्ति, संरक्षण, अनुदानों की व्यवस्था की जाती रहे। अपनी सक्रियता से प्रज्ञा अभियान को भी सूचित करें, ताकि अन्यों को भी प्रेरणा मिलती रहे।

आत्मचेतना के जागरण की सुखद परिणति, हरीभरी हो रही है प्रकृति

आचार्य श्रीराम शर्मा स्मृति उपवन : रोपी 21,000 वृक्षों की पौध

इंदौर। मध्य प्रदेश

इंदौर जिले के रेवती रेंज में हुए ऐतिहासिक पौधरोपण अभियान में अखिल विश्व गायत्री परिवार इन्दौर के लगभग पाँच सौ परिजनों ने भाग लेते हुए 21,000 पौधों के रोपण का अपना संकल्प पूरा किया। इन्दौर की विविध शाखाओं से आये परिजनों ने तरु पूजन, स्वस्तिवाचन के पश्चात् यह पौधे रोपे। श्री मनीष निगम ने बताया कि इस कार्यक्रम में 7 वर्ष के बच्चे से लेकर 75 वर्ष के वरिष्ठ परिजनों ने बड़े उत्साह के साथ तरुरोपण महायज्ञ में भाग लिया। सर्वश्री त्रिलोक सोलंकी, ढिंगरा जी, संजय शर्मा, महेश शर्मा, गोविंद उपाध्याय, राम लखन पाल, इंद्रमणि पांडे, गोपाल निगम, कासट जी, खरे जी, तारकेश्वर जी आदि की अगुवाई में यह कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

रेवती रेंज के जोन क्रमांक-1 के सबजोन क्रमांक-12 को प्रशासन द्वारा 'आचार्य श्रीराम शर्मा स्मृति उपवन" घोषित किया गया है।

इंदौर में चल रहे वृक्षारोपण का विहंगम दृश्य

1,500 पौधे रोपे

सांसद और विधायक रहे उपस्थित

जाश्मा गाँव में अब तक 5,000 वृक्ष लगाए और सुरक्षित किये गए हैं।

चित्तौड़गढ़। राजस्थान : गायत्री शक्तिपीठ चित्तौड़गढ़ द्वारा जिले की भूपाल सागर तहसील में जाश्मा गाँव के पास शनि महाराज मंगरा पर विशाल पौधारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम चित्तौड़गढ़ के सांसद श्री सी.पी. जोशी के मुख्य आतिथ्य में और क्षेत्रीय विधायक श्री अर्जुन जीनगर की अध्यक्षता में आयोजित हुआ। गायत्री शक्तिपीठ के प्रबंधक ट्रस्टी श्री रमेश चंद्र पुरोहित ने बताया कि इस अवसर पर 1500 पौधे लगाकर उनका संरक्षण करने का संकल्प लिया गया। गायत्री परिवार राजस्थान के वरिष्ठ प्रतिनिधि श्री घनश्याम पालीवाल ने उपस्थित लोगों को लगाए गए पौधों के पुत्रवत पालन की भावभरी प्रेरणा दी।

जिला वृक्षारोपण अभियान प्रभारी श्री शांतिलाल जाट ने बताया कि इस स्थान पर विगत दो वर्षों में लगभग पाँच हजार पौधे लगाए गए हैं और उनकी सुरक्षा के लिए मंगरा के चारों तरफ कंटीले तारों की बाड़ लगाई गई है।

महारुद्राभिषेक और तरुपुत्र महायज्ञ : 201 पौधे लगाए

चंद्रपुर। महाराष्ट्र

शिवपुराण में कलयुग में श्रावण मास में पार्थिव शिवलिंग के पूजन और रुद्राभिषेक का विशेष महत्त्व बताया गया है। जनमानस की इस आस्था को देखते हुए गायत्री शक्तिपीठ चंद्रपुर में 201 पार्थिव शिवलिंग महारुद्राभिषेक सम्पन्न कराया गया। गायत्री परिवार ने महारुद्राभिषेक के साथ 201 तरुपुत्र महायज्ञ का उपक्रम जोड़कर इसे और भी समाजोपयोगी एवं श्रद्धा संवर्धक बना दिया।

मुख्य यजमान श्री विजय भट्ट दम्पति द्वारा कलश पूजन के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। तरुपूजन और तरुमिलन के भावविभोर कर देने वाले प्रसंग ने सभी के हृदयों को छू लिया। 201 दम्पतियों ने एक-एक पौधे को गोद में लेकर उसका पूजन किया। तरुमिलन के क्रम में उसे मित्र या पुत्रवत मानते हुए गले लगाकर उसका पालन करने का संकल्प लिया। कार्यक्रम में लगभग 300 अन्य परिजन उपस्थित थे।

विधायक ने सराहा, सहयोग का हाथ बढ़ाया

श्री वेदमाता गायत्री शक्तिपीठ चंद्रपुर के द्वारा आयोजित महारुद्राभिषेक एवं तरुपुत्र महायज्ञ के प्रमुख अतिथि के रूप में चंद्रपुर के विधायक माननीय श्री किशोर भाऊ जोगेवार एवं उद्योगपति श्री संदीप जी बांठिया थे। उन्होंने इस कार्यक्रम से प्रभावित होकर गायत्री परिवार द्वारा बृहद वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित कराने का संकल्प लिया। उन्होंने गायत्री शक्तिपीठ में लाइट और पीने के लिए शुद्ध पानी के लिए मशीन लगवाने का आश्वासन भी दिया।

डॉ. शैलेंद्र कुमार शुक्ल ने बताया कि इस कार्यक्रम में उपस्थित समस्त बहिनों द्वारा रक्षाबंधन के समय अपने भाइयों से उपहार में व्यसन मुक्त जीवन जीने का संकल्प लेने का आह्वान भी किया गया। इस कार्यक्रम की सफलता के लिए समस्त कार्यकर्त्ताओं ने पूरी निष्ठा और तन्मयता के साथ अपना योगदान दिया।

जन्माष्टमी के दिन आश्रम में रोपे गए 301 पौधे

जमशेदपुर। झारखण्ड

गायत्री परिवार टाटानगर के युवाओं ने पटमदा से 30 किलोमीटर दूर राधा कृष्ण मंदिर (बामु साधु आश्रम) में 301 पौधों का रोपण किया। पौधारोपण का यह पुनीत कार्य पुरुलिया शक्तिपीठ की सुश्री गायत्री सिंघानिया की मुख्य उपस्थिति में रेखा शर्मा और मंजु मोदी की 20 बहिनों की टोली द्वारा सम्पन्न कराया गया। प्रान्तीय युवा प्रकोष्ठ झारखण्ड के समन्वयक श्री संतोष कुमार राय सहित युवा भाइयों ने सहयोग प्रदान करते हुए सभी का उत्साह बढ़ाया।

स्थानीय विद्यालय के बच्चों को गायत्री मंत्र लेखन पुस्तिकाएँ और कॉपी, पेंसिल भी दिये गए।

समस्त पौधे भगेरिया फाउंडेशन के संचालक श्री प्रमोद जी द्वारा उपलब्ध कराए गए थे। स्थानीय युवा श्री अजय महतो और श्री बलराम महतो की अगुवाई में नवगठित नवयुगदल ने लगाये गए पौधों के संरक्षण की जिम्मेदारी ली।

कई गाँवों में हुआ वृक्षारोपण 2,105 वृक्षों की पौध लगाई

लाँजी, बालाघाट। मध्य प्रदेश

लाँजी शाखा ने 9 एवं 20 अगस्त को बृहद् वृक्षारोपण अभियान चलाकर कुल 2105 वृक्षों की पौध लगाई। दिनांक 9 अगस्त को काली मंदिर, लाँजी प्रांगण में गायत्री परिवार के 20 कार्यकर्त्ताओं ने अनुविभागीय अधिकारी की उपस्थिति में वृक्षारोपण किया।

दिनांक 20 अगस्त को लाँजी नगर के वॉर्ड क्र.9 में आगामी 251 कुण्डीय यज्ञ के प्रचार-प्रसार के लिए विविध कार्यक्रम रखे गए थे। इसमें उपस्थित लोगों को सामूहिक साधना, सत्साहित्य का स्वाध्याय और वृक्षारोपण की प्रेरणाएँ दी गईं। इन प्रेरणाओं को हृदयंगम करते हुए लगभग 50 कार्यकर्त्ताओं ने बड़गाँव, आवा, कनेरी, दिघोरी, खाडापुरी आदि गाँवों में और लाँजी ग्राम पंचायत के विविध वॉर्डों में वृक्षारोपण किया। श्री छन्नूलाल जी के मार्गदर्शन में वृक्षारोपण कार्य 25 अगस्त तक चला। इसमें कुल 2105 वृक्षों की पौध लगाई गई।

थाना परिसर में रोपे 151 पौधे

थाना प्रभारी करेंगे देखभाल

टाटानगर। झारखण्ड

गायत्री परिवार टाटानगर के नवयुगदल ने बिरसानगर थाना परिसर में 151 पौधों का रोपण किया। यह समस्त पौधे गायत्री शिशु विद्या मंदिर, चन्द्री और भगेरिया फाउंडेशन, चक्रधरपुर के साथ वृक्षगंगा अभियान, केंदुझर (ओडिशा) द्वारा उपलब्ध कराए गए थे।

पौधारोपण से पूर्व थाना प्रभारी श्री नामधारी रजक ने पौधों का पूजन किया। श्री आर.पी. शर्मा ने पर्यावरण संरक्षण के लिए वृक्षों के महत्त्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। थाना प्रभारी श्री नामधारी जी ने कहा कि आपने हमारे थाना परिसर में जो पौधे लगाए हैं, उन सब पौधों की देखभाल करने की जिम्मेदारी आज से मेरी है।

कार्यक्रम के अंत में प्रान्तीय युवा समन्वयक श्री संतोष कुमार राय ने थाना प्रभारी को गुरुदेव का साहित्य भेंट कर उनका सम्मान किया। कार्यक्रम का संचालन श्री राजन गोराई ने एवं मंच संचालन श्री प्रशान्त कालिन्दी ने किया। नवयुगदल के 30 से अधिक भाई-बहिनों ने कार्यक्रम में अपना योगदान दिया।

महाविद्यालय में 101 पौधे रोपे

रीवा। मध्य प्रदेश

दिनांक 16 अगस्त 2024 को शासकीय इंजीनियरिंग कॉलेज रीवा में भारत पेन्शनर्स समाज रीवा एवं अखिल विश्व गायत्री परिवार रीवा के संयुक्त तत्वावधान में 'एक पेड़ मां के नाम' कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में गायत्री परिवार के वृक्षगंगा अभियान के अंतर्गत कॉलेज परिसर में विशिष्ट अतिथियों एवं उपस्थित कार्यकर्त्ताओं से वृक्ष पूजन कराया गया, तत्पश्चात् गायत्री मंत्रोच्चार के साथ 101 पौधों का रोपण किया गया।

इस कार्यक्रम में पेंशनर्स समाज के अध्यक्ष श्री शेर बहादुर सिंह, महासचिव श्री राजेन्द्र सिंह बघेल, संरक्षक डॉ. मंगलेश्वर सिंह एवं इंजीनियरिंग कॉलेज के प्राचार्य तथा सहयोगी स्टाफ की उपस्थिति में गायत्री शक्तिपीठ के प्रमुख ट्रस्टी श्री प्रमोद सिंह, व्यवस्थापक श्री हेमराज शर्मा, जिला समन्वयक श्री रवीन्द्र सिंह, तहसील समन्वयक श्री ऋषिकेश तिवारी, ट्रस्टी श्रीमती पुष्प दशरथ सिंह, प्रसून सिंह ने भाग लिया। उपस्थित सभी परिजनों को गुरुदेव का साहित्य भेंट किया गया।

गुरु पूर्णिमा पर्व पर बृहद् वृक्षारोपण, 525 पौधे लगाए

नासिक। महाराष्ट्र

गायत्री परिवार युग निर्माण योजना ट्रस्ट नासिक ने गुरु पूर्णिमा के दिन डांग सेवा मंडल की ठक्कर बापा प्राथमिक एवं माध्यमिक आश्रमशाला अंबेगण में 5 कुंडीय गायत्री महायज्ञ के साथ तरुपुत्र रोपण यज्ञ भी सम्पन्न किया। इस अवसर पर विद्यालय परिसर की पाँच एकड़ भूमि में बड़ पाकड़, गूलर, नीम, आम, बेर , सीताफल, सागौन आदि के कुल 525 वृक्षों की पौध लगाई गई। गायत्री परिवार ने इन पौधों की सिंचाई के लिए ड्रिप सिंचाई की सुविधा भी प्रदान की। विद्यालय के लगभग 500 बच्चों ने एक-एक वृक्ष की देखभाल करने की जिम्मेदारी ली है। समारोह में विद्यालय के सभी शिक्षक, प्रधानाचार्य, जय योगेश्वर आश्रम शाला ठाणगाँव के प्रधानाचार्य एवं शिक्षक तथा वन विभाग के पदाधिकारी, सरपंच आदि उपस्थित थे।

समारोह में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा में भाग लेने वाले आदिवासी विस्तार की 14 स्कूलों को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया।

डांग सेवा मंडल की अध्यक्षा माननीया हेमलता विडकर एवं सचिव मृणाल ताई ने इन विशिष्ट सेवाओं के लिए गायत्री परिवार के परिजनों का सत्कार किया।

तरुपुत्र महायज्ञ से प्रभावित हुए इंडियन बैंक के अधिकारी

मुम्बई। महाराष्ट्र

इंडियन बैंक के वरिष्ठ अधिकारियों ने स्थानीय गायत्री परिवार के परिजनों के सहयोग से वृक्षारोपण का कार्यक्रम आयोजित किया। बैंक ने अपने सामाजिक दायित्वों के अंतर्गत तरुपुत्र/तरुमित्र यज्ञ का आयोजन करते हुए 55 वृक्षों की पौध लगाई। अधिकारीगण गायत्री परिवार की वृक्षों के प्रति श्रद्धा बढ़ाने वाली इस योजना से बहुत प्रभावित थे। उन्होंने भविष्य में भी ऐसे कार्यक्रमों में सहयोग करने का आश्वासन दिया।

मुम्बई में वृक्षारोपण करते इंडियन बैंक के अधिकारी

अति आधुनिक मिलेनियम सिटी में बृहद् वृक्षारोपण

गुरुग्राम। हरियाणा

श्रावणी पर्व एवं रक्षाबंधन के पावन अवसर पर मिलेनियम सिटी गुरुग्राम की गायत्री परिवार शाखा के परिजनों ने अति आधुनिक क्षेत्र सेक्टर-65 में बृहद् वृक्षारोपण किया। इस अवसर पर नीम, पीपल और गूलर की पौध रोपी गई तथा उन्हें संरक्षित करने के उपाय किए गए। उल्लेखनीय है कि गुरुग्राम शाखा सेक्टर-65 स्थित कई एकड़ में फैले पावर सब स्टेशन की भूमि पर विगत कई वर्षों से तरुरोपण अभियान चला रही है।

अब आप 01334-311001 पर फोन कर शान्तिकुञ्ज की नई स्वचालित फोन व्यवस्था (आईवीआर) से शान्तिकुञ्ज के विभिन्न विभागों से सीधा सम्पर्क कर सकते हैं।

सेवा-सहयोग

स्वतंत्रता दिवस पर रक्तदान

गौरीगंज, अमेठी। उत्तर प्रदेश

गायत्री परिवार अमेठी एवं इण्डियन रेड क्रॉस सोसाइटी अमेठी द्वारा 78वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर रक्तदान महायज्ञ का आयोजन किया गया। जिला युवा समन्वयक डॉ. प्रवीण सिंह दीपक ने बताया कि मलिक मोहम्मद जायसी संयुक्त जिला चिकित्सालय गौरीगंज के ब्लड बैंक में आयोजित इस रक्तदान महायज्ञ में गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ताओं ने 14 यूनिट रक्तदान किया। सभी रक्तवीरों को गायत्री परिवार व इंडियन रेड क्रॉस सोसाइटी की तरफ से तिलक लगा कर व प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

जिला समन्वयक डॉ. त्रिवेणी सिंह ने सभी का स्वागत करते हुए कहा कि पीड़ितों, वंचितों की सेवा गायत्री परिवार का नैतिक दायित्व है।

तुलसी के पौधे बाँटे

भुबनेश्वर। ओडिशा : गायत्री प्रज्ञापीठ एस.एस. नगर, भुबनेश्वर ने स्वतंत्रता दिवस के दिन एस्प्लाण्ड मॉल रसूलगढ़ में साहित्य स्टॉल लगाया। इस अवसर पर गायत्री परिवार ने 100 तुलसी के पौधे तथा 'तुलसी के चमत्कारिक गुण' पुस्तक निःशुल्क वितरित किए।

जरूरतमंद विद्यार्थियों में ₹ 4,50,000 की नोटबुक्स बाँटीं

नासिक। महाराष्ट्र

गायत्री परिवार युग निर्माण योजना ट्रस्ट नासिक हर वर्ष आदिवासी बच्चों में शिक्षा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से बच्चों को निःशुल्क नोटबुक्स वितरित करता है। इस वर्ष जुलाई माह में ट्रस्ट द्वारा कुल ₹ 4,50,000 की लगभग 20000 नोटबुक्स वितरित की गईं।

5 वर्ष गायत्री परिवार युग निर्माण योजना ट्रस्ट नासिक जरूरतमंद आदिवासी बच्चों में नोटबुक वितरण का यह कार्य विगत 5 वर्षों से लगातार कर रहा है।

ट्रस्ट द्वारा यह नोटबुक आदिवासी विस्तार के डांग सेवा मंडल के 12 स्कूलों में कक्षा 1 से 10वीं तक के विद्यार्थियों को दी गईं। सुरगाणा तालुका के आश्रमशाला, मनखेड, आश्रमशाला जय योगेश्वर, ठाणगाँव, तालुका इगतपुरी, वैतरणा इंग्लिश स्कूल, येवला तालुका के सावरगाँव में जय जनार्दन स्कूल, नासिक तालुका के अनेक स्कूलों में आर्थिक दृष्टि से कमजोर बच्चों में भी निःशुल्क नोटबुक वितरित की गईं। नासिक शहर के वे स्कूल, जो भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा में भाग लेते हैं, उनके विद्यार्थियों को भी गायत्री परिवार की ओर से नोटबुक्स प्रदान की गईं।

प्राप्त नोट बुक्स के साथ एक विद्यालय के लाभार्थी विद्यार्थी

बाँटी गई इन पुस्तिकाओं के मुख पृष्ठ पर माँ गायत्री, स्वामी विवेकानन्द, युग निर्माण की प्रतीक लाल मशाल जैसे चित्र छपे हैं, जो विद्यार्थियों के लिए वर्षभर प्रेरणादायक होंगे।

बच्चों का व्यक्तित्व सँवार रही हैं बाल संस्कार शालाएँ

गद्‌गद है समाज

बिरनी, गिरिडीह। झारखण्ड

बिरनी प्रखंड क्षेत्र के ग्राम गुरहा निवासी श्री भवानी प्रसाद वर्मा अपने गाँव के बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिए पिछले दो वर्षों से श्रीराम बाल संस्कारशाला चला रहे हैं। यह संस्कारशाला प्रतिदिन चलती है, जिसमें बच्चों में नैतिक मूल्य संवर्धन और उन्हें अच्छे संस्कार देने के लिए तरह-तरह के कार्यक्रम चलाए जाते हैं।

श्री भवानी प्रसाद वर्मा की सेवाओं से गाँव के लोग गद्‌गद हैं। उनका कहना है कि इस शाला के माध्यम से उनके बच्चों को ऐसी शिक्षा मिल रही है, जिससे उन्हें जीवन में सही दिशा में आगे बढ़ने में मदद मिलेगी। श्री भवानी प्रसाद वर्मा का यह प्रयास न केवल उनके गाँव के बच्चों के लिए, बल्कि पूरे समाज के लिए प्रेरणादायक है।

गिरिडीह के श्री बुधन प्रसाद वर्मा ने बताया कि बिरनी प्रखंड सरंडा की पूनम भदानी तथा अन्य गाँवों और समुदायों में भी गायत्री परिवार के नैष्ठिक कार्यकर्त्ताओं द्वारा इसी तरह की संस्कार शालाओं का संचालन किया जा रहा है।

नई बाल संस्कार शालाओं का शुभारंभ हुआ

चित्तौड़गढ़। राजस्थान

गाँव सोमरवालों का खेड़ा और देवपुरा में स्थानीय प्रज्ञा मंडल द्वारा निःशुल्क बाल संस्कार शाला का समारोहपूर्वक शुभारंभ किया गया। एडवोकेट श्री विनोद कुमार दाधीच तथा श्री छीतरमल पुरोहित ने आचार्य पद का वरण करते हुए इस बाल संस्कारशला के नियमित संचालन का दायित्व सँभाला है।

उद्‌घाटन समारोह में एडवोकेट श्री अंबालाल जाट, नंदराम सुथार की गरिमामय उपस्थिति रही। गायत्री शक्तिपीठ के व्यवस्थापक श्री शांतिलाल जाट, मुरलीधर अहीर, बाबूलाल पाटीदार एवं श्री हितेश दाधीच ने कार्यक्रम का संचालन किया। इस अवसर पर 10 से 14 वर्ष के लगभग 40 बच्चे एवं उनके अभिभावकगण उपस्थित थे।

मुजगहन, धमतरी। छत्तीसगढ़

गायत्री परिवार मुजगहन ने संस्कारवान समाज निर्माण के अभियान के अंतर्गत धूनादास मंदिर प्रांगण स्थित गायत्री प्रज्ञापीठ में बाल संस्कार शाला का शुभारंभ किया है। इसका शुभारंभ करते हुए जिला समन्वयक श्री दिलीप नाग ने बाल संस्कार शालाओं को चरित्र निर्माण का केन्द्र बताया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे श्री राधेश्याम साहू ने बाल संस्कार शाला को बच्चों को टी.वी. एवं मोबाइल के दुष्प्रभावों से बचाने के लिए एक महत्त्वपूर्ण कदम बताया। बाल संस्कार शाला के संचालक आचार्य व्याख्याता ओम प्रकाश नाग ने बच्चों में छिपी हुई प्रतिभा को निखार कर उनकी शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक क्षमता का विकास करने का संकल्प दोहराया।

बिरनी, गिरिडीह (झारखण्ड), चित्तौड़गढ़ (राजस्थान) तथा मुजगहन (छत्तीसगढ़) की बाल संस्कार शालाओं में भाग ले रहे बच्चे

आत्मीयता एवं संगठन विस्तार युवा कार्यशाला

बानसूर, कोटपुतली-बहरोड। राजस्थान

गायत्री परिवार बानसूर के द्वारा गायत्री शक्तिपीठ बानसूर में जिला स्तरीय युवा आत्मीयता एवं संगठन विस्तार कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें युवा संगठन 'दिया' के प्रतिनिधि जयपुर से आए श्री संदीप त्रिपाठी एवं अलवर से आए श्री मुकेश गुप्ता, श्री अमित वशिष्ठ, डॉ. वैशाली गुप्ता ने प्रेरक उद्‌बोधन दिए।

श्री संदीप त्रिपाठी जी ने गायत्री मंत्र के अवलंबन से मानवीय उत्कर्ष की सुनिश्चित संभावनाओं पर प्रकाश डाला। डॉ. वैशाली गुप्ता ने निजी परिवार तथा गायत्री परिवार में नारी सशक्तीकरण का आदर्श प्रस्तुत करने की प्रेरणा दी। बानसूर से श्री रघुवीर यादव ने कार्यक्रम का संचालन किया। श्री सुभाष यादव ने नई युवा टीम का गठन कर कार्यक्रम का समापन किया।

आयुर्वेद महाविद्यालय में वाङ्मय स्थापना

लखनऊ। उत्तर प्रदेश : गायत्री ज्ञान मंदिर इंदिरा नगर, लखनऊ के विचार क्रान्ति ज्ञानयज्ञ अभियान के अन्तर्गत जावित्री इंस्टीट्यूट ऑफ आयुर्वेदिक मेडिकल साइंसेज एण्ड हॉस्पिटल, रायबरेली रोड, लखनऊ के पुस्तकालय में युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा रचित वाङ्मय के सम्पूर्ण 79 खण्डों की स्थापना की गई। यह गायत्री ज्ञान मंदिर द्वारा विगत लगभग 14 वर्षों से चलाए जा रहे वाङ्मय स्थापना अभियान के अंतर्गत 417वीं स्थापना थी। सक्रिय कार्यकर्त्ता श्री हंस जी ने अपने पूर्वजों की स्मृति में यह साहित्य भेंट किया है। सभी छात्र-छात्राओं एवं संकाय सदस्यों को हिन्दी अखण्ड ज्योति पत्रिका भेंट की गई।

अभियान संयोजक श्री उमानंद शर्मा ने इस अवसर पर कहा कि यह साहित्य मानवीय गरिमा का बोध कराता है। श्रीमती ऊषा सिंह ने भी अपने विचार व्यक्त किये, संस्थान की प्राचार्या डॉ. सीमा सक्सेना ने धन्यवाद ज्ञापन व्यक्त किया।

वाङ्मय स्थापना समारोह में उपस्थित शिक्षक, विद्यार्थी

श्रीमद प्रज्ञा पुराण कथा

राठ, हमीरपुर। उत्तर प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ राठ पर पाँच दिवसीय श्रीमद प्रज्ञापुराण कथा ज्ञानयज्ञ का आयोजन हुआ। इस कार्यक्रम में भाग ले रहे लगभग 200 श्रद्धालुओं ने शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधियों से मानवोचित उत्कृष्ट जीवन जीने की प्रेरणाएँ प्राप्त कीं।

राठ के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता पं. चन्द्र शेखर मिश्र ने कहा कि सामाजिक एकता, संस्कार संवर्धन, धार्मिक सद्भाव हमारा लक्ष्य है। मानवीय वृत्तियों में सुधार, परिष्कार से ही सारी दुनिया में तनाव घटेगा और सुख-शांति का वातावरण बनेगा।

यह कार्यक्रम अयोध्या धाम से पधारे श्री राम केवल जी एवं श्री राज बहादुर की टोली ने सम्पन्न कराया। दीपयज्ञ के अवसर पर आध्यात्मिक चेतना के नवोन्मेष के लिए गायत्री परिवार द्वारा चलाए जा रहे अभियानों की जानकारी दी गई।

पाँच कुंडीय गायत्री महायज्ञ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। इस अवसर पर पुंसवन, जन्मदिन, विवाह दिन और मंत्र दीक्षा संस्कार सम्पन्न कराये गए। विविध कार्यक्रमों का संचालन डॉ. लक्ष्मण लाल त्रिपाठी ने किया।

हिन्दू जन आक्रोश रैली में गायत्री विद्यापीठ की सहभागिता

राजनांदगाँव। छत्तीसगढ़

सर्व हिन्दू समाज राजनांदगाँव द्वारा 17 अगस्त के दिन नगर में हिन्दू जन आक्रोश रैली का आयोजन किया गया। इसमें शिक्षा, संस्कार एवं संस्कृति के उत्थान के लिए प्रतिबद्ध गायत्री विद्यापीठ की अहम सहभागिता रही। विद्यालय से शिक्षण समिति के सदस्य, प्राचार्य, शिक्षकवृंद एवं समस्त कर्मचारियों ने रैली में भाग लेकर बांग्लादेश में हो रहे हिन्दुओं के नरसंहार के विरोध में सहभागिता दी। रैली समापन के बाद एसडीएम श्री अतुल विश्वकर्मा को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नाम ज्ञापन सौंपा गया। इस विशाल रैली में विश्व हिन्दू परिषद, बजरंग दल और भाजपा के लोग भी शामिल थे।

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा

राज्य स्तर पर वरीयता प्राप्त छात्रा का सम्मान

कु. ललिता का सम्मान करते गणमान्य

चंद्रशेखर आजाद नगर, अलीराजपुर। म. प्रदेश

गतवर्ष आयोजित भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा में ग्राम जामली, छकतला की छात्रा कु. ललिता चौहान ने राज्य स्तर पर वरीयता प्राप्त की। जिला संगठन ने इस विशिष्ट उपलब्धि के लिए उसे समारोहपूर्वक सम्मानित किया। समारोह के मुख्य अतिथि पूर्व विधायक श्री माधौसिंह डावर, नगर पंचायत अध्यक्ष सुश्री निर्मला डावर एवं गायत्री परिवार के जिला समन्वयक श्री संतोष वर्मा ने कु. ललिता को प्रशस्ति पत्र एवं निर्धारित नकद राशि प्रदान कर सम्मानित किया।

श्री माधौसिंह डावर ने इस अवसर पर अपने आशीर्वचन में सभी विद्यार्थियों से मानव में देवत्व जगाने वाली भारतीय संस्कृति के जीवन मूल्यों को अपने व्यक्तित्व में धारण करने की प्रेरणा दी। उन्होंने भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा की प्रशंसा करते हुए कहा कि यह किसी एक धर्म पर आधारित नहीं है, इसमें समस्त धर्मों के ज्ञान का समावेश है। सभी विद्यार्थियों को इस परीक्षा में भाग लेकर भारतीय संस्कृति का ज्ञान प्राप्त करना चाहिए।

श्री संतोष वर्मा ने श्रोताओं से कहा कि समय रहते बच्चों को संस्कारित करना, उनमें होने वाले नैतिक पतन को रोकना हमारा सबसे बड़ा दायित्व हैं। सभा को भूर सिंह भिंडे, सरदार सिंह निंगवाल द्वारा भी संबोधित किया गया। कार्यक्रम में ललिता चौहान के परिजन एवं कन्या शिक्षा परिसर के शिक्षक भी उपस्थित थे।

भगवान के काम में लग जाने वाला कभी घाटे में नहीं रहता।

श्रावण मास में युग निर्माणी आस्थाओं का पोषण, संवर्धन

नगर में नई पहल : वृक्ष काँवड़ यात्रा का आयोजन

मोडासा, अरवल्ली। गुजरात

गायत्री चेतना केन्द्र मोडासा ने इस वर्ष श्रावण मास में 25 अगस्त को वृक्ष काँवड़ यात्रा निकालकर नगरवासियों को सच्ची शिव आराधना का संदेश दिया। वृक्ष काँवड़ यात्रा गायत्री चेतना केन्द्र से आरंभ होकर मुख्य चौक तक पहुँची। इसमें 24 युवाओं तथा बड़ी संख्या में युग निर्माणी बहिनों ने कंधे पर काँवड़ रखकर उनमें विविध प्रकार के पौधों को सजाया था।

गायत्री परिवार के प्रवक्ता श्री हरेश कंसारा ने लोगों को बताया कि श्रावण मास शिव की आराधना के साथ जल संरक्षण तथा हरीतिमा संवर्धन का संदेश देने का पर्व है। वस्तुतः वृक्ष भगवान शिव का सच्चा रूप है। वृक्ष हैं तो जल है, वृक्ष हैं तो जीवन है। वृक्ष ही धरती पर पर्यावरण संतुलन स्थापित करते हैं। अतः भगवान शिव को मनाना है तो हम सबको वृक्षारोपण की ओर ध्यान देना चाहिए।

ढाई लाख महामृत्युंजय मंत्र जप

कुरुक्षेत्र। हरियाणा

गायत्री परिवार कुरुक्षेत्र द्वारा श्रावण मास में सवा लाख महामृत्युंजय मंत्र जप के साथ देवाधिदेव महादेव की पूजा का लक्ष्य रखा गया था। कार्यकर्त्ताओं के उत्साहवर्धक सहयोग के परिणामस्वरूप लक्ष्य से दो गुना-ढाई लाख महामृत्युंजय मंत्र जप हुआ। इस अनुष्ठान की पूर्णाहुति 11 अगस्त को शक्तिपीठ पर गायत्री यज्ञ के साथ हुई।

श्री डी.पी. शर्मा एवं श्री बी.के. कौशिक के अनुसार श्रद्धालुओं को महादेव शिवजी के कल्याणकारी स्वरुप के विषय में बताया गया। इस अनुष्ठान के माध्यम से सामाजिक सुख-शान्ति की प्रार्थना की गई, वहीं भगवान शिव से जुड़ी तमाम भ्रान्तियों को दूर करने का प्रयास भी किया गया। शिवभक्तों को भांग, धतूरा आदि पदार्थों का सेवन न करने और हर प्रकार के नशे से मुक्त रहने का संकल्प दिलाया गया।

मनोरंजक एवं ज्ञानवर्धक कार्यक्रमों के साथ मनाया सावन महोत्सव, वृक्षारोपण की प्रेरणा दी

टाटानगर। झारखण्ड : गायत्री ज्ञान मंदिर भालूबासा में सावन महोत्सव मनाया गया। जमशेदपुर की सभी 24 शाखाओं की सैंकड़ों बहिनों ने इसमें भाग लिया। सावन के गीत, क्विज आदि कई प्रतियोगिताएँ आयोजित हुईं। सावन मास में अधिक से अधिक पौधरोपण की प्रेरणा दी गईं।

टाटानगर में सावन महोत्सव मना रही बहिनें

समारोह के आरंभ में बहिनों ने विश्व में शांति का वातावरण बने, इस हेतु गायत्री मंत्र का सामूहिक जप किया। आगामी दिनों होने वाले नारी सशक्तीकरण शिविर के संबंध में विस्तार से चर्चा हुई। श्रीमती जसवीर कौर ने कहा कि पहली बार शान्तिकुञ्ज से आ रही आदरणीया शेफाली पण्ड्या जी के सान्निध्य का लाभ उपजोन के अंतर्गत तीनों जिलों के प्रत्येक कार्यकर्त्ता को मिले, ऐसे प्रयास हम सबको करने चाहिए।

निःशुल्क शिविर लगाकर की लाखों काँवड़ियों की सेवा

देवघर। झारखण्ड

विश्व प्रसिद्ध श्रावणी मेला बाबा धाम देवघर में गायत्री शक्तिपीठ डाबर ग्राम देवघर से जुड़े गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ताओं द्वारा काँवड़ियों के लिए निःशुल्क सेवा शिविर का संचालन किया गया। यह शिविर श्रावण मास के प्रारंभ से ही आरंभ किया गया। काँवड़धारी धर्मात्माओं के बीच फल एवं शरबत का निरंतर वितरण किया जाता रहा। प्रथम दिन इसका शुभारंभ श्री महेन्द्र प्रसाद यादव तथा श्रीमती श्यामा देवी ने किया।

ज्ञातव्य है कि लाखों काँवड़िये सुल्तानगंज की उत्तरवाहिनी गंगा से काँवड़ में परम पावन गंगाजल भरकर 120 किलोमीटर की पैदल यात्रा करते हुए देवघर लाते हैं। उससे बाबा धाम देवघर में दिव्य मनोकामना ज्योतिर्लिंग का अभिषेक करते हैं। गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ताओं ने उनकी सेवा करते हुए अपार आनन्द की अनुभूति की।

संकल्प सिद्धि यज्ञ एवं चांद्रायण साधना अनुष्ठान की पूर्णाहुति

नागपुर। महाराष्ट्र

गायत्री शक्तिपीठ नंदनवन नागपुर में दिनांक 20 अगस्त 2024 को संकल्प सिद्धि ग्यारह कुंडीय गायत्री महायज्ञ एवं श्रावणी पर्व का आयोजन किया गया। इस अवसर पर दिनांक 21 जुलाई से 19 अगस्त 2024 तक चले एक मासीय विश्व स्तरीय चांद्रायण साधना अनुष्ठान की पूर्णाहुति की गई। उल्लेखनीय है कि परम वंदनीया माताजी एवं अखण्ड दीप की जन्म शताब्दी की अभूतपूर्व सफलता की कामना-प्रार्थना के साथ यह विशिष्ट साधना अनुष्ठान सम्पन्न किया गया था।

> कार्यकर्त्ता बहिनों ने घर-घर एवं स्कूलों में जाकर लोगों को व्यसन छोड़ने हेतु प्रेरित करने का अभियान चलाने का संकल्प लिया।

श्रावणी-रक्षाबंधन पर्व के उपलक्ष्य में वृक्षपूजन एवं हेमाद्रि संकल्प के विशिष्ट क्रम संपन्न हुए। श्री कल्याणेश्वर मंदिर महल के ट्रस्टी अध्यक्ष श्री सुशील खोबरागड़े की सपत्नीक विशेष उपस्थिति रही। गायत्री परिवार के सक्रिय कार्यकर्त्ता श्री स्वामी भद्रे जी सहित कई परिजनों का जन्मदिन संस्कार मनाया गया।

नागपुर में बहिनों की टोली द्वारा किया जा रहा 11 कुण्डीय यज्ञ का संचालन

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर विद्यार्थियों की प्रेरक प्रस्तुतियाँ

राजनांदगाँव। छत्तीसगढ़ : शिक्षा एवं संस्कार के क्षेत्र में अग्रणी जिले की ख्याति प्राप्त शिक्षण संस्था गायत्री विद्यापीठ में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व पर अत्यंत आकर्षक और प्रेरणाप्रद कार्यक्रमों का आयोजन हुआ।

भगवद्गीता के प्रमुख अध्यायों का धारा प्रवाह वाचन और सुमधुर बाँसुरी की धुन ने सभी का मन मोह लिया। विद्यार्थियों द्वारा सामूहिक नृत्य के माध्यम से श्रीकृष्ण का अर्जुन से संवाद, अर्जुन का व्यामोह, द्रोपदी का संकल्प, श्रीकृष्ण द्वारा द्रोपदी की रक्षा जैसे प्रसंगों को दिखाया गया,

> प्राचार्य श्रीमती शैलजा नायर ने कहा कि भगवान श्रीकृष्ण का जीवन हमें विपरीत परिस्थितियों में भी शांति और धैर्य के साथ प्रसन्नतापूर्वक जीवन जीने का संदेश देता है।

जिन्होंने सभी का मन मोह लिया। श्रीकृष्ण के जीवन से जुड़े प्रसंगों पर ज्ञानवर्धक प्रश्नोत्तरी हुई। पूरा सभागार 'जय श्रीकृष्ण' के उद्घोष से गूँजता रहा। विविध रोचक प्रतियोगिताएँ हुईं।

एनडीआरएफ के 38 जवानों को राखी बाँधी

शान्तिकुञ्ज की कार्यकर्त्ता श्रीमती पद्मा देसाई जवानों को तिलक कर राखी बाँधते हुए

वलसाड। गुजरात

पारिवारिकता की अनुभूति गायत्री परिवार की विशेषता है। इसी भाव से प्रेरित होकर वलसाड में गायत्री परिवार की बहिनें श्रीमती पद्मा देसाई एवं श्रीमती शैलजा देसाई (देवरानी, जेठानी) ने वलसाड के इच्छाबा अनाविल देसाई पंच नी वाडी, तीथल रोड में तैनात एनडीआरएफ के 38 जवानों को राखी बाँधकर रक्षाबंधन पर्व मनाया। उन्होंने उन जवानों की सेवाओं के प्रति आभार व्यक्त करते हुए उनके सुरक्षित जीवन एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

रक्षाबंधन पर्व जैसे अवसरों पर पारिवारिक आत्मीयता से वंचित जवानों के लिए यह पल भावविभोर करने वाले थे। कमान प्रमुख श्री रमेश कुमार जी ने कहा कि आपका यह स्नेह हमें आजीवन याद रहेगा और राष्ट्र की सेवा के लिए उत्साह जगाता रहेगा। बहिनों के साथ उनके पति श्री कीर्तन देसाई और कल्पेश देसाई भी थे। उन्होंने बताया कि गायत्री परिवार भी आप ही की तरह राष्ट्र के उत्थान के लिए समर्पित होकर विश्व मानवता की सेवा में जुटा है।

कारगिल विजय दिवस पर सम्मानित हुए श्री जितेन्द्र सिंह

श्री जितेंद्र सिंह मान. मुख्यमंत्री जी से सम्मान प्राप्त करते हुए

लखनऊ। उत्तर प्रदेश : 26 जुलाई 2024 को लखनऊ सेंटर कमान में कारगिल विजय दिवस की रजत जयंती भव्य समारोह के साथ मनाई गई। इस अवसर पर उत्तर प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी ने कारगिल युद्ध में शहीद हुए सैनिकों की पत्नियों को और युद्ध में भाग लेने वाले सैनिकों को सम्मानित किया। इस समारोह में कारगिल युद्ध में भाग लेने वाले गायत्री परिवार के सदस्य, 141 फील्ड रेजिमेंट के नायक श्री जितेंद्र सिंह को भी मुख्यमंत्री जी ने सम्मानित किया।

श्री जितेंद्र सिंह रेनुकूट सोनभद्र गायत्री परिवार के सक्रिय कार्यकर्त्ता हैं। देश की रक्षा के लिए किए गए अपने योगदान पर वे गौरव की अनुभूति करते हैं। उसी साहस और लगन के साथ वे इन दिनों परम पूज्य गुरुदेव के विचारों को समाज में फैलाकर देश को उत्कर्ष की राह पर ले जाने के लिए प्रयत्नशील हैं।

निःशुल्क पुस्तकालय की स्थापना

ऑनलाइन अध्ययन के लिए इंटरनेट सुविधाएँ भी उपलब्ध

सीधी। मध्य प्रदेश : गायत्री परिवार ट्रस्ट सीधी के युवा प्रकोष्ठ द्वारा आचार्य श्रीराम शर्मा स्वाध्याय पुस्तकालय का शुभारंभ किया गया है। मुख्य प्रबंध ट्रस्टी श्री के.के. मिश्रा ने बताया कि पुस्तकालय पूर्णतः निःशुल्क है। गायत्री शक्तिपीठ सीधी द्वारा संचालित पुस्तकालय में पठन-पाठन हेतु आध्यात्मिक वातावरण के साथ निःशुक्ल वाईफाई की सुविधा भी उपलब्ध कराई गई है, ताकि पाठक इंटरनेट पर उपलब्ध युग साहित्य एवं आर्ष साहित्य का भी अध्ययन कर सकें।

श्री के.के. मिश्रा ने बताया कि पुस्तकालय में उपलब्ध धार्मिक ग्रंथ, वेद-वेदांग, उपनिषद, महापुरुषों की जीवनी, पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से लोगों को अपने गौरवशाली इतिहास एवं संस्कृति का परिचय कराया जा रहा है। प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु समसामयिक पत्रिका एवं समाचार पत्र भी उपलब्ध हैं। शक्तिपीठ पर संगीत की कक्षाएँ लगाई जाती हैं एवं ध्यान, योग, साधनात्मक कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते हैं।

शक्तिपीठ पर सामूहिक रक्षाबंधन

जमशेदपुर। झारखण्ड

गायत्री ज्ञान मंदिर भालूबासा में भाई-बहिन के अटूट प्रेम का प्रतीक रक्षाबंधन पर्व बड़ी धूमधाम से मनाया गया। श्रीमती रेखा शर्मा एवं मंजू मोदी तथा श्री आर.पी. शर्मा, श्री गुरुदेव महतो व श्री मुन्ना पांडे ने रक्षाबंधन पर्व की प्रेरणाओं पर प्रकाश डालते हुए समाज में नारी शक्ति के गौरव की रक्षा के लिए उपयुक्त वातावरण तैयार करने का आह्वान किया। श्रीमती रूबी शर्मा ने कार्यक्रम का संचालन किया।

सद्गुरु की अवहेलना करने से सारा अभ्युदय नष्ट हो जाता है।

देव परिवार निर्माण संकल्प समारोह

'मेरा गाँव देव गाँव', 'मेरा परिवार देव परिवार' जैसे अभियान चलाएँगे। अमेठी को युग निर्माणी जिला बनायेंगे।

अमेठी। उत्तर प्रदेश

मार्च 2025 में अमेठी में राष्ट्र जागरण 251 कुंडीय गायत्री महायज्ञ सम्पन्न होने जा रहा है। 4 अगस्त 2024 को टेरी, मुंशीगंज के आशीर्वाद मैरिज हॉल में गायत्री शक्तिपीठ अमेठी की ओर से आयोजित भव्य देव परिवार निर्माण संकल्प समारोह ने इस आयोजन की सफलता की सशक्त बुनियाद रखी। इसमें अमेठी, सुलतानपुर, प्रतापगढ़, रायबरेली से आए हजारों कर्मठ कार्यकर्त्ता एवं प्रबुद्धजनों ने भाग लिया।

संकल्प समारोह में अमेठी को युग निर्माणी जिला बनाने के लक्ष्य के साथ 'मेरा गाँव देव गाँव', 'मेरा परिवार देव परिवार' जैसे अभियान चलाने, नशा मुक्त समाज का निर्माण करने की प्रेरणाएँ दी गईं। युवाओं के साथ व्यक्तित्व परिष्कार, भारतीय संस्कृति का प्रचार, पर्यावरण संरक्षण और संवर्धन, नारी जागरण अभियान सहित समाज को आगे बढ़ने के लिए अनेक कार्यक्रमों पर भी चर्चा की गई। मुख्य वक्ता शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री आशीष सिंह ने आगामी राष्ट्र जागरण गायत्री महायज्ञ को सृजनात्मकता और सक्रियता की दृष्टि से लघु अश्वमेध यज्ञ का स्वरूप देने की प्रेरणा दी।

सम्मेलन को संबोधित करते शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री आशीष सिंह

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री राम शंकर पटेल, अयोध्या जोन समन्वयक श्री देश बंधु तिवारी, उपजोन समन्वयक श्री कैलाश नारायण तिवारी, डॉ. सुधाकर सिंह ने भी संबोधित किया। अमेठी के जिला समन्वयक डॉ. त्रिवेणी सिंह ने महायज्ञ के लिए अंशदान के संकल्प की शुरुआत की। उन्होंने पाँच लाख रुपये, युवा प्रभारी डॉ. प्रवीण सिंह दीपक ने एक लाख रुपये तथा श्री सुभाष चंद्र द्विवेदी ने एक लाख रुपये के अंशदान के साथ अन्नदान का संकल्प लिया। प्रांतीय युवा प्रकोष्ठ प्रतिनिधि श्री प्रभाकर सक्सेना सहित अनेक गणमान्यों की उपस्थिति रही।

बीएचईएल, जगदीशपुर के कर्मचारियों ने सीखे तनाव प्रबंधन के सूत्र

''तनाव जीवन का अभिन्न अंग है। जो इसका प्रबंधन नहीं कर पाते, वे कष्ट पाते हैं। जो आध्यात्मिक जीवन, नैतिक मूल्यों के पालन, ध्यान, योग आदि से तनाव प्रबंधन में सक्षम होते हैं, उनके जीवन में हर चुनौती नई-नई क्षमताओं का विकास करती जाती है। मनुष्य के अंदर वह सामर्थ्य है, जिससे कि वह अपने पुरुषार्थ के बल पर बड़ी से बड़ी कठिनाइयों पर विजय प्राप्त कर सकता है।'' - *श्री आशीष सिंह, शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि*

जगदीशपुर, अमेठी। उत्तर प्रदेश

गायत्री परिवार अमेठी के सौजन्य से दिनांक 5 अगस्त 2024 को बीएचईएल जगदीशपुर के कांफ्रेंस हॉल में व्यक्तित्व परिष्कार एवं तनाव प्रबंधन विषय पर मोटिवेशनल सेमिनार का आयोजन हुआ। इसमें युवा प्रकोष्ठ, शान्तिकुञ्ज के प्रतिनिधि श्री आशीष सिंह ने पॉवर पॉइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से अपने विचार और अनुभव व्यक्त किए।

सेमीनार का शुभारंभ बीएचईएल के महाप्रबंधक श्री नवीन कौल, एच.आर. प्रमुख श्री एस.पी. सिंह, गायत्री परिवार के जिला समन्वयक डॉ. त्रिवेणी सिंह, युवा जिला समन्वयक डॉ. दीपक सिंह के द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ किया गया। श्री नवीन कौल ने शान्तिकुञ्ज के साथ जुड़ी अपनी स्मृतियों को साझा करते हुए अतिथियों का स्वागत किया। राजभाषा अधिकारी श्री जन्मेजय सिंह ने कार्यक्रम का सफल संचालन किया। श्री एस.पी. सिंह ने अंत में अतिथियों, आयोजकों, समस्त सहयोगी एवं श्रोताओं के प्रति आभार व्यक्त किया।

आत्मीयता के विस्तार की सुखद अनुभूतियाँ

लखनऊ। उत्तर प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ गोला रोड, लखनऊ में 18 अगस्त को प्रान्तीय युवा प्रकोष्ठ उत्तर प्रदेश के मार्गदर्शन में दम्पति शिविर का आयोजन किया गया। प्रान्तीय प्रतिनिधि श्री कैलाश नारायण तिवारी और श्री प्रभाकर सक्सेना ने शिविर में भाग ले रहे दम्पतियों को विवाह के समय की गई प्रतिज्ञाएँ और आदर्श दाम्पत्य जीवन के सूत्रों का पुनःस्मरण कराया। उनसे विवाह के समय ली गई प्रतिज्ञाएँ दोहरवाई गई। परस्पर पुष्पोपहार के साथ जीवन में प्रेम, सौजन्य, सहकार बनाए रखने का आश्वासन दिया। पति-पत्नी ने एक-दूसरे का हाथ पकड़कर दो शरीर, एक प्राण होने का ध्यान किया। कई दम्पतियों ने ध्यान की अनुभूतियों को अभूतपूर्व अनुभव बताया।

शक्तिपीठ प्रबंधन ने प्रतिवर्ष ऐसे दम्पति शिविर आयोजित करने का निर्णय लिया। शिविर में प्रान्तीय प्रतिनिधि श्री जयप्रकाश वर्मा, श्री सियाराम जायसवाल, उपजोन समन्वयक श्री आर. एस. पाल सहित जिला समन्वयक, प्रमुख कार्यकर्त्ताओं की भी उपस्थिति रही।

सुरम्य जलाशयों के तट पर मनाया गया श्रावणी पर्व

हैदराबाद में, जोबट की डोही नदी में और हटा में सुरई घाट पर श्रावणी उपाकर्म करते गायत्री परिवार के परिजन

हैदराबाद। तेलंगाना

दिनांक 19 अगस्त 24, श्रावणी पूर्णिमा के दिन राजस्थानी ब्राह्मण महासभा द्वारा श्रावणी उपाकर्म का विशाल कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें 200 से अधिक गायत्री साधकों ने भाग लिया। कार्यक्रम के विविध चरण हेमाद्रि संकल्प, प्रायश्चित्त स्नान, ऋषितर्पण, देवतर्पण, मनुष्यतर्पण जैसे विविध कर्मकाण्डों के माध्यम से मानव जीवन की गरिमा और परम पूज्य गुरुदेव के रूप में अवतरित महान ऋषिसत्ता के सान्निध्य लाभ का गौरव बोध कराया गया।

इस कार्यक्रम में 24 बटुक ब्राह्मणों ने यज्ञोपवित धारण किया। समस्त 200 विप्र बंधुओं ने 5 कुंडीय गायत्री महायज्ञ में आहुतियाँ समर्पित कीं।

इस कार्यक्रम के संचालन एवं सफलता में गायत्री परिवार हैदराबाद की ओर से सर्वश्री गोकुलचंद उपाध्याय, विनोद चौरसिया, नरेशकुमार साहू, चंद्रराज पटेल, राम आसरे शांता उपाध्याय, संतोष दीदी ने विशिष्ट योगदान दिया। राजस्थानी ब्राह्मण सभा के पदाधिकारी सर्वश्री पुरुषोत्तम लाला, रामदेव नागला, दामोदर जोशी, हरिकिशन ओझा, भगवान बिलाल, पवन उपाध्याय, सत्यनारायण उपाध्याय, मोहनलाल व्यास की गरिमामय उपस्थिति रही।

कषाय-कल्मषों को उतारकर नवजीवन पाने का पर्व है श्रावणी

जोबट, अलीराजपुर। मध्य प्रदेश

गायत्री परिवार जोबट ने स्थानीय डोही नदी तट पर श्रावणी पर्व मनाया। परिजनों ने हल्दी, शहद, गोबर, गोमूत्र, गोदुग्ध, दही, राख, घी आदि से दश स्नान और देवतर्पण, ऋषितर्पण, पितृतर्पण, हेमाद्रि संकल्प आदि विधियाँ बड़े उत्साह के साथ सम्पन्न कीं। वानप्रस्थी श्री राजेन्द्र प्रसाद सोनी ने पर्व के प्रयोजन पर प्रकाश डालते हुए बताया कि जिस प्रकार सर्प अपनी केंचुली उतार कर नवजीवन प्राप्त करता है, उसी प्रकार हमें श्रावणी उपाकर्म के साथ अपने जीवन के कषाय-कल्मषों से मुक्त होकर मानवोचित जीवन जीने का संकल्प लेना चाहिए। उन्होंने इसे जीवन को उच्च आदर्शवादी और अधिक प्रखर-तेजस्वी बनाने वाला पर्व बताया।

नदी तट पर श्रावणी उपाकर्म के पश्चात् गायत्री शक्तिपीठ में नौ कुण्डीय यज्ञ हुआ। सभी ने एक-दूसरे को राखी बाँधकर रक्षाबंधन पर्व मनाया। जोबट एवं अन्य गाँवों से आए 60 परिजनों ने इसमें भाग लिया। श्रावणी पर्व का संचालन श्री माँगीलाल डाबर ने किया।

हटा, दमोह। मध्य प्रदेश

गायत्री परिवार हटा ने श्रावणी पूर्णिमा के दिन पूरे विधि-विधान से श्रावणी पर्व बड़े हर्षोल्लासयम वातावरण में मनाया। शाखा परिजनों ने अपनी शाखा की स्थापना के 46वें वर्ष में प्रातः 7 बजे से श्रावणी उपाकर्म आरंभ कर दिया। यह कार्यक्रम रामगोपाल जी वार्ड स्थित सुरई घाट पर आयोजित किया गया था।

डॉ. सी.एल. नेमा ने श्रावणी उपाकर्म की प्रेरणाओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि यह वही दिन है जिस दिन ब्रह्म में 'एकोऽहम बहुस्याम्' की स्फुरणा के साथ सृष्टि का निर्माण हुआ था। उन्होंने श्रावणी पर्व को ब्राह्मणत्व एवं ऋषित्व के अभिवर्धन का पर्व बताया। उन्होंने कहा कि हमें व्यक्तिगत ही नहीं, सारे समाज के हितों के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए।

कार्यक्रम के प्रथम चरण में माँ गंगा मैया के जयकारों के साथ दश स्नान और हेमाद्रि संकल्प के साथ परिजनों ने नए यज्ञोपवीत धारण किये। द्वितीय चरण में शिव मंदिर में दीप यज्ञ हुआ, जिसमें सभी ने अपने-अपने घर में एक पौधा रोपने का संकल्प लिया। सभी की कलाइयों में राखी बाँधी गई। इस अवसर पर अरुण पटेल, जयप्रकाश नेमा, रामकिशोर दुबे आदि अनेक परिजन थे।

शक्तिपीठों में मनाये गये श्रावणी पर्व समारोह

ऋषि परंपरा के अनुगमन और सांस्कृतिक चेतना के उन्नयन के संकल्प जगाए

खरगोन। मध्य प्रदेश

गायत्री गौशाला वृक्षतीर्थ मेहरजा खरगोन में द्विजत्व के संकल्प का पर्व श्रावणी पूरे उत्साह और विधि-विधान के साथ मनाया गया। दशविधि स्नान, ऋषिपूजन, तर्पण, यज्ञोपवीत पूजन, धारण अथवा परिवर्तन के पश्चात् सभी ने गायत्री यज्ञ करते हुए जीवन को उत्कृष्टता की ओर ले जाने के संकल्प लिए। श्रावणी उपाकर्म में ज्ञात-अज्ञात पापों के प्रायश्चित हेतु हेमाद्रि संकल्प कराया गया।

कार्यक्रम में यज्ञोपवीतधारी और सामान्य श्रद्धालु सभी ने भाग लेते हुए ऋषि परम्परा का अनुसरण करने की प्रेरणा पाई। परिव्राजक श्री सौरभ मोरे ने कर्मकाण्ड सम्पन्न कराया। श्री लक्ष्मण पटेल ने देव पूजन किया।

उपस्थित भाई-बहिनों ने रक्षाबंधन का पर्व भी बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया। सभी ने एक-दूसरे को रक्षासूत्र बाँधते हुए बहिनों की सुरक्षा का संकल्प लिया, शुभकामनाएँ दीं। पर्वोत्सव में सर्वश्री योगेश पाटीदार, हीरालाल सोनी, मुकेश पाटीदार, संजय विष्णोले, श्याम सोनी, मोहन कुशवाह, शुभम पाटिल, संदीप सांगरे आदि के साथ ही आसपास की शाखाओं से पधारे सैकड़ों परिजनों ने भागीदारी की।

शक्तिपीठ खरगोन में मनाया जा रहा श्रावणी पर्व

राठ, हमीरपुर। उत्तर प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ पर श्रावणी पर्व सामाजिक नवजागृति के मार्मिक संदेश के साथ सोल्लास मनाया गया। डॉ. एल.एल. त्रिपाठी ने पर्व संदेश में कहा, ''इन दिनों मनुष्य की संवेदनाएँ सूख-सी गई हैं। इसलिए हमें स्नेह का सावन बनकर बरसना होगा।'' उन्होंने श्रावणी उपाकर्म के माध्यम से नारी जीवन की पवित्रता व अस्मिता सुरक्षित रहे, समाज संस्कारित हो, प्रकृति-पर्यावरण संरक्षित और समृद्ध रहे तथा राष्ट्र-रक्षा के प्रति हम सभी सावधान रहें, इसी पावन संकल्प को लेने हेतु सबका मानस तैयार किया।

पर्व पूजन श्री अरुण माहेश्वरी, गिरीश बुधौलिया तथा हर नारायण सिंह ने किया। इस अवसर पर मुख्य संदेश वाहक मुख्य ट्रस्टी पं. चन्द्रशेखर मिश्र ने पर्व के इतिहास और उससे जुड़ी प्रेरणाओं पर प्रकाश डाला। महिला मंडल की प्रमुख बहिन श्रीमती उषा व्यास ने कहा कि नारी के प्रति बहिन, पुत्री और माता की दृष्टि से ही व्यक्ति, समाज और राष्ट्र का चरित्र गौरवान्वित रहा है और आगे भी रहेगा।

पंच कुंडीय यज्ञ में जीवन को धर्म के सच्चे मार्ग पर अग्रसर करने की प्रेरणाएँ दी गईं। एक मासीय अनुष्ठान करने वाले परिजनों ने अपने अनुष्ठान की पूर्णाहुति की।

एक शाम शहीदों के नाम

देवास। मध्य प्रदेश

गाायत्री शक्तिपीठ साकेत नगर एवं गायत्री प्रज्ञापीठ विजय नगर पर स्वतंत्रता दिवस समारोह बड़े गौरव, शान, उत्साह एवं उमंग के साथ आयोजित हुए। गायत्री शक्तिपीठ पर सुबह ध्वजारोहण और शाम को 'एक शाम देश के शहीदों के नाम' शीर्षक से देशभक्ति से ओतप्रोत रंगारंग कार्यक्रम संपन्न हुआ। इसमें गायत्री शक्तिपीठ बाल संस्कार शाला के बच्चों ने एक से बढ़कर एक शानदार गीतों की प्रस्तुति दी, विजेताओं को सम्मानित भी किया गया ।

गायत्री शक्तिपीठ पर वरिष्ठ परिजन श्री मांगीलाल परमार, श्री महेश चौधरी तथा परिजन एवं बच्चों की उपस्थिति में श्री भारत सिंह बनाफर ने ध्वजारोहण किया। ध्वजारोहण के पश्चात् गायत्री महायज्ञ में विश्व शांति, विश्व कल्याण एवं शहीदों की आत्मशांति के लिए विशेष आहुतियाँ समर्पित की गईं।

गायत्री प्रज्ञापीठ विजय नगर पर श्री शेषनारायण परमार के मुख्य आतिथ्य में प्रज्ञापीठ की संरक्षिका दुर्गा दीदी ने ध्वजारोहण किया।

प्रेम ही एक ऐसा प्रकाश है, जिसका अवलंबन लेकर मनुष्य इस संघर्षमय संसार में जीवन यात्रा को सफल कर सकता है।

ओडिशा का प्रान्तीय पुरस्कार वितरण समारोह

सन् 2019, 2022 और 2023 के पुरस्कारों का वितरण किया गया

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा

सर्वाधिक सहयोग करने वाले विद्यालय एवं महाविद्यालयों के 10-10 अध्यापकों को 'पं. श्रीराम शर्मा आचार्य उत्कृष्ट सेवा शिक्षक सम्मान' से विभूषित किया गया।

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि एवं गणमान्यों के साथ पुरस्कृत विद्यार्थी

भुबनेश्वर। ओडिशा : युगशक्ति गायत्री भवन, भुबनेश्वर में दिनांक 25 अगस्त 2024 को ओडिशा का प्रांत स्तरीय भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा पुरस्कार वितरण समारोह सम्पन्न हुआ। इस समारोह में विगत तीन वर्षों में (सन् 2019, 2022 और 2023) में हुई परीक्षा के वरीयता प्राप्त विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। उल्लेखनीय है कि कोरोना त्रासदी के कारण विगत वर्षों में ओडिशा प्रान्त में पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित नहीं हो सके थे।

ओडिशा सरकार की अतिरिक्त शिक्षा सचिव श्रीमती शुभश्री नंद समारोह की मुख्य अतिथि थीं। उन्होंने अपने उद्बोधन में विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण की दृष्टि से भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा को बहुत उपयोगी और प्रभावशाली बताया।

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री योगेन्द्र गिरि ने विद्यार्थियों को कोरी पढ़ाई तक सीमित रहने की अपेक्षा जीवन मूल्यों के अभिवर्धन पर ध्यान देने की प्रेरणा दी। श्री शेषदेव बढ़ई ने कहा कि विद्यार्थी सद्विचारों और सत्प्रवृत्तियों में संलग्न रहेंगे तो तमाम सामाजिक विकृतियों से बचे रहेंगे।

इससे पूर्व प्रांतीय संयोजक श्री प्रफुल्ल चंद्र दास ने स्वागत उद्बोधन दिया। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री कमल नारायण साहू ने परीक्षा संबंधी जानकारियाँ प्रदान कीं। कार्यक्रम का संचालन श्री राजेन्द्र महापात्र ने किया।

समारोह में प्रतिवर्ष प्रांतीय स्तर पर वरीयता प्राप्त प्रत्येक वर्ग के तीन-तीन विद्यार्थियों को पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र प्रदान किए गए। सर्वाधिक भागीदारी करने वाले तीन-तीन विद्यालयों को ट्रॉफी प्रदान की गई। सर्वाधिक सहयोग करने वाले विद्यालय एवं महाविद्यालयों के 10-10 अध्यापकों को 'पं. श्रीराम शर्मा आचार्य उत्कृष्ट सेवा शिक्षक सम्मान' से विभूषित किया गया।

कार्यक्रम की सफलता में शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री मंगल सिंह गढ़वाल, श्री सौमित्री थानपति, श्री बलराम साहू, श्री उपेन्द्र पात्र, डॉ. रजत षड़ंगी, श्री मदन मोहन राउत, श्री संतोष जेना, श्रीमती उर्मिला मिश्र आदि की उपस्थिति और वी.एस.एस. नगर प्रज्ञापीठ के भाई-बहिनों का अविस्मरणीय योगदान रहा।

समाजोपयोगी परम्पराओं को जन्म देती प्रगतिशील प्रेरणाएँ

रक्षाबंधन पर्व से जुड़ी वीरपोस की परम्परा से जोड़ा वृक्षारोपण

खरगोन। मध्य प्रदेश

निमाड़ क्षेत्र में रक्षाबंधन से पूर्व भाई अपनी बहिन के घर रक्षाबंधन का निमंत्रण देने जाते हैं। इस अवसर पर वे अपनी बहिन के लिए उपहार स्वरूप कुछ जीवनोपयोगी वस्तुएँ भी ले जाते हैं। यह परंपरा सदियों से चली आ रही है, जिसे वीरपोस (इसपोस) कहा जाता है।

परम पूज्य गुरुदेव ने कहा कि परम्पराओं की तुलना में विवेक को महत्त्व दें। गायत्री परिवार के डॉ. संतोष पाटीदार ने इस तथ्य के आधार पर वीरपोस के साथ एक प्रगतिशील परम्परा जोड़ी है, जिसके अंतर्गत बहिन के घर जाने वाले भाई उसे एक फलदार वृक्ष का पौधा भेंट करते हैं। बहिनों द्वारा संरक्षित, पोषित यह पौधा वृक्ष बनकर बहिन के परिवार का पोषण तो करता ही है, पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता को भी पूरी करता है।

वनमण्डलाधिकारी खरगोन श्री प्रशांत सिंह शक्तिपीठ में पौध वितरण करते हुए। उन्होंने गायत्री परिवार की प्रगतिशील सोच और परम्परा की भूरि-भूरि सराहना की। इस वर्ष पूरे खरगोन जिले में गायत्री परिवार की विभिन्न शाखाओं के लगभग 600 कार्यकर्त्ताओं ने अपनी बहिनों को फलदार वृक्षों की पौध भेंट की।

विंध्य विहार निवासी श्रीमती चंद्रकला कुशवाह को उनके भाई योगेश कुशवाह ने सन् 2017 में वीरपोस में सीताफल का पौधा भेंट किया था। आज उस वृक्ष का फल पूरा परिवार खा रहा है। इसवर्ष वीरपोस के लिए पहुँचे उनके भाई योगेश, कमलेश, राहुल, शुभम और रविंद्र ने भाव विभोर होकर पौधे के साथ फोटो लिए।

12 वर्ष पूर्व आरंभ की गई यह परम्परा गायत्री परिवार में तो लोकप्रिय है ही, अब यह एक सामाजिक आन्दोलन का रूप ले चुकी है। इस वर्ष भी गायत्री शक्तिपीठ खरगोन द्वारा वीरपोस के लिए बहिनों के घर जा रहे भाइयों को फलदार वृक्षों की पौध भेंट की गई। इस वर्ष 150 आम के व 100 पौधे बिल्व पत्र के वितरण किए गए।

प्रज्ञापुराण कथा द्वारा प्रगतिशील परम्पराओं की प्रेरणा

भिलाई, दुर्ग। छत्तीसगढ़

इस्पात नगरी भिलाई के सेक्टर-5 स्थित जय-विजय ऑडिटोरियम में 9 से 11 अगस्त तक पर्यावरण संरक्षण एवं जनकल्याण हेतु 5 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ एवं पावन प्रज्ञा पुराण कथा का आयोजन किया गया।

पावन प्रज्ञापुराण कथा में गौ, गंगा, गीता, गायत्री तथा गुरु की महत्ता बताई गई। व्यर्थ में अन्न और जल की बर्बादी न करने, घर हो या शादी-विवाह हो, जूठन न छोड़ने, नशा से दूर रहने, पर्यावरण को बचाये रखने के लिए अपने जन्मदिन, विवाहदिन, पितृतर्पण जैसे विशिष्ट अवसरों पर वृक्षारोपण करने जैसी अनेक प्रगतिशील प्रेरणाएँ समाज को दी गईं। अनेक लोगों ने नियमित गायत्री महामंत्र लेखन के संकल्प लिए।

यह कार्यक्रम परम वंदनीया माताजी की जन्मशताब्दी के प्रयाज स्वरूप आयोजित किया गया था। इसमें भिलाई नगर निगम के महापौर श्री नीरज पाल, सेक्टर-5 भिलाई के वार्ड पार्षद श्री पंकज पाल, गायत्री परिवार के उपजोन समन्वयक श्री एस.पी. सिंह, श्री मोहन उमरे आदि अनेक कार्यकर्त्ताओं का उत्साहपूर्ण सहयोग रहा।

हिन्दू त्यौहारों की शाश्वत प्रेरणाएँ

ऑस्ट्रेलिया में आयोजित हुआ सम्मेलन

पर्थ। ऑस्ट्रेलिया

11 अगस्त 2024 को बीएपीएस श्री स्वामीनारायण मंदिर, पर्थ ने बीएपीएस स्वामीनारायण शोध संस्थान के तीसरे वार्षिकोत्सव के अवसर पर 'हिंदू त्यौहारों की शाश्वत प्रेरणाएँ' विषय पर एक सम्मेलन का आयोजन किया। इसमें स्थानीय हिंदू समुदाय के 23 संगठनों के 51 प्रतिनिधियों ने भाग लिया, जो हिंदू त्यौहारों में निहित गहन ज्ञान को संरक्षित एवं साझा करने की सामूहिक प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

इस सम्मेलन में गायत्री जनसेवा केन्द्र (पर्थ में गायत्री परिवार की शाखा) को आमंत्रित किया गया था।

सम्मेलन को संबोधित करते श्री नीरवभाई वैद

श्री नीरवभाई वैद ने अपनी शाखा का प्रतिनिधित्व करते हुए सम्मेलन में उपस्थित लगभग 600 लोगों को गायत्री परिवार का संदेश दिया। गायत्री मंत्र के साथ उन्होंने अपना व्याख्यान आरंभ किया तो पूरा हॉल गायत्री मंत्र से गूँज उठा। श्री नीरव भाई वैद ने परम पूज्य गुरुदेव के विचारों के प्रकाश में जन्माष्टमी पर्व की प्रासंगिकता और भगवान श्रीकृष्ण के जीवन चरित्र की व्याख्या की।

पर्थ में भारत के महावाणिज्यदूत श्री अमरजीत सिंह ताखी और वेस्टर्न ऑस्ट्रेलिया में विधान सभा सदस्य श्री याज मुबारकाई की गरिमामयी उपस्थिति रही। सम्मेलन में गायत्री परिवार के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्री राजेशभाई पटेल और यतिन भाई पांचाल भी उपस्थित रहे।

स्वामीजी श्री भद्रेश दास जी का सम्मान

श्री नीरवभाई वैद ने स्वामीनारायण मंदिर के स्वामीजी श्री भद्रेश दास जी से मुलाकात की। गायत्री मंत्र लिखित उपवस्त्र ओढ़ाकर और युगसाहित्य भेंट कर उन्हें सम्मानित किया। उन्हें परम पूज्य गुरुदेव, शान्तिकुञ्ज, श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी, आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या तथा मिशन की गतिविधियों से अवगत कराया।

स्वतंत्रता दिवस पर पर्यावरण के प्रति जागरूकता का संदेश

ग्रेटर नोएडा, गौतमबुद्ध नगर। उत्तर प्रदेश

दिया, ग्रेटर नोएडा ने देश के स्वतंत्रता दिवस पर 'पेड़ लगाओ, प्रकृति बचाओ' के उद्घोष के साथ स्वर्ण नगरी में पर्यावरण जागरूकता रैली निकाली। टीम के सदस्यों ने अपने हाथों में एक-एक पौधा लेकर नगरवासियों को पर्यावरण सुरक्षा का संदेश दिया। रैली के समापन पर स्वर्ण नगरी के सेंट्रल पार्क में 24 पौधे लगाए गए।

कार्यकर्त्ताओं ने लगाए गए एक-एक पौधे को गोद लिया और उसके रख रखाव का संकल्प लिया।

प्रशिक्षण शिविर : वर्ष 2024-25 की कार्ययोजना का निर्धारण

खरगोन। मध्य प्रदेश

गायत्री परिवार खरगोन ने दिनांक 24 अगस्त को वृक्षतीर्थ मेहरजा में जिला स्तरीय संगठनात्मक प्रशिक्षण सत्र का आयोजन कर 2024-25 की कार्ययोजना सुनिश्चित की। इसके अनुसार आगामी दिनों में जिले में 5 कुण्डीय, 9 कुंडीय और 24 कुण्डीय यज्ञों के कुल 137 कार्यक्रम आयोजित किए जाएँगे। इसके अलावा जिले में 30 प्रशिक्षण शिविर, 10 पाठक सम्मेलन, 10 कन्या कौशल शिविर एवं 10 नारी जागरण सम्मेलन आयोजित करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। प्रत्येक पंचायत स्तर पर रचनात्मक आन्दोलनों को गति देने पर भी विचार-विमार्श हुआ।

मध्य जोन प्रभारी श्री राजेश पटेल प्रशिक्षण शिविर को संबोधित करते हुए

गुना उपजोन प्रभारी श्री महेश केवट, ओंकारेश्वर उपजोन प्रभारी श्री पन्नालाल बिरला तथा मध्य प्रदेश जोन प्रभारी श्री राजेश पटेल ने कार्यकर्त्ता के गुणों की व्याख्या करते हुए व्यक्तित्व में विनम्रता और कर्मठता को बढ़ाते रहने की प्रेरणा दी। श्रीमती संगीता विष्णोले ने बाल निर्माण आन्दोलन और श्री बी.एस. मंडलोई ने भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा संबंधी योजनाओं पर प्रकाश डाला।

आरंभ में जिला संयोजक श्री जोगीलाल मुजाल्दे ने स्वागत भाषण दिया। शिविर की अध्यक्षता श्री लक्ष्मण पटेल ने और संचालन श्री योगेश पाटीदार ने किया।

दिवंगत देवात्माओं को भावभरी श्रद्धाञ्जलि

श्री जनार्दन प्रसाद मौर्य, शान्तिकुञ्ज के जीवनदानी कार्यकर्त्ता

शान्तिकुञ्ज के समर्पित कार्यकर्त्ता श्री जनार्दन प्रसाद मौर्य जी का 75 वर्ष की उम्र में दिनांक 28 अगस्त 2024 को स्वर्गवास हो गया। श्री मौर्य जी घोसिया, जिला भदोही (उत्तर प्रदेश) के मूल निवासी थे। वे सन् 1970 में गायत्री परिवार से जुड़े और लगभग 55 वर्ष तक परम पूज्य गुरुदेव, परम वंदनीया माताजी और उनके मिशन के प्रति पूरी निष्ठा एवं समर्पण भाव के साथ सेवाएँ प्रदान करते रहे।

स्व. श्री जनार्दन प्रसाद मौर्य जी सन् 2000 से शान्तिकुञ्ज में जीवनदानी कार्यकर्त्ता के रूप में सेवाएँ प्रदान कर रहे थे। उन्होंने भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा संबंधी साहित्य प्रकाशन में विशिष्ट योगदान दिया। अपना अधिकांश समय गायत्री तपोभूमि, मथुरा में देते हुए वे शान्तिकुञ्ज एवं तपोभूमि, मथुरा के बीच एक सुदृढ़ कड़ी बने रहे।

श्री दिनेशभाई पटेल, बारडोली, सूरत। गुजरात

गायत्री परिवार बारडोली के प्रबल एवं निष्ठावान कार्यकर्त्ता श्री दिनेशभाई भीखाभाई पटेल का दिनांक 19 अगस्त 2024, रक्षाबंधन के दिन निधन हो गया। 74 वर्षीय श्री दिनेशभाई 46 वर्षों तक मिशन की सेवा करने के बाद पार्थिव देह त्यागकर पावन गुरुसत्ता की सूक्ष्म चेतना में विलीन हो गए।

स्व. दिनेशभाई ने सन् 1978 में परम पूज्य गुरुदेव से मंत्र दीक्षा ली। गुरुसत्ता के आह्वान पर रेलवे से स्वैच्छिक सेवा निवृत्ति ली और अपने गृहनगर बारडोली में अपने घर से ही गायत्री परिवार की गतिविधियों का शुभारंभ किया। अपने जीवनकाल में उन्होंने 200 से अधिक कार्यकर्त्ताओं को प्रशिक्षित किया और 3000 से अधिक लोगों को गायत्री परिवार से जोड़ा। उनकी धर्मपत्नी शांताबेन और दोनों बेटों ने उनका साथ दिया और आज भी वह अपने पिता के दिखाए रास्ते पर चल रहे हैं।

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया शैल जीजी ने दोनों देवात्माओं के निधन को मिशन के लिए अपूरणीय क्षति बताया। शान्तिकुञ्ज एवं समस्त गायत्री परिवार की माँ गायत्री और पावन गुरुसत्ता से प्रार्थना है कि वे उन्हेंअपने चरणों में स्थान दें।

हम शरीर को तीर्थ की तरह स्वच्छ, सुंदर और विकारशून्य बनाने का प्रयत्न करें।

रक्षाबंधन : नारी सुरक्षा और नारी सशक्तीकरण के प्रति निष्ठावान रहने के संकल्प का पर्व

''श्रावणी ज्ञानपर्व है, ऋषि परंपरा के उच्च आदर्शों के प्रति निष्ठा जगाने का पर्व है। यह जीवन में ब्राह्मणत्व के अभिवर्धन का पर्व है। श्रावणी देश, धर्म, समाज के प्रति समर्पण भाव के पोषण एवं अभिव्यक्ति का पर्व है।''

अखिल विश्व गायत्री परिवार के प्रमुख श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने उपरोक्त संदेश के साथ गायत्री परिवार और समस्त देशवासियों को श्रावणी-रक्षाबंधन पर्व की शुभकामनाएँ दीं। इस अवसर पर उन्होंने आत्मीय परिजनों को परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी के जीवन-आदर्शों का अनुसरण करते हुए समाज के लिए प्रकाश स्तंभ बनने की प्रेरणा दी। श्रद्धेय ने सभी परिजनों को नारी सुरक्षा और नारी सशक्तीकरण के प्रति जागरूक और निष्ठावान रहने के संकल्प दिलाए।

समाज में पारिवारिक भावनाएँ जगाएँ

श्रद्धेया शैल जीजी ने कहा कि रक्षाबंधन विमल प्रेम का प्रतीक है। जिस तरह इस दिन बहिनें अपनी रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहने वाले अपने भाइयों को राखी बाँध कर निःस्वार्थ प्रेम की अभिव्यक्ति करती हैं, उसी तरह देश और समाज की रक्षा करने वाले सैनिकों, सुरक्षा बलों, अस्पतालों में सेवाएँ प्रदान करने वाले चिकित्सा कर्मियों जैसे अनेक वर्गों को भी स्नेह-सूत्र के माध्यम से आत्मीयता और कृतज्ञता का अहसास कराया जाना चाहिए।

सत्संग भवन में श्रावणी उपाकर्म में यज्ञोपवीत परिवर्तन करते साधकगण तथा श्रद्धेय डॉ. साहब को राखी बाँधती बहिनें

श्रावणी : ब्राह्मणत्व के अभिवर्धन का संकल्प

इससे पूर्व शान्तिकुञ्ज में प्रातःकाल श्रावणी उपाकर्म सम्पन्न हुआ। दश स्नान, यज्ञोपवीत परिवर्तन, हेमाद्रि संकल्प आदि कर्मकाण्डों के माध्यम से व्यक्तित्व में पवित्रता, प्रखरता बढ़ाने, ज्ञान-साधना करने की प्रेरणाएँ दी गईं। मंचासीन पुरोहितों ने परम पूज्य गुरुदेव के नैष्ठिक शिष्य के रूप में 'सादा जीवन, उच्च विचार' के सूत्र को अपनाते हुए जीवन में ब्राह्मणत्व को निरंतर बढ़ाते रहने और वृक्षारोपण के संकल्प कराए। इस अवसर पर सभी साधकों को भारत को अखण्ड और विकसित भारत के निर्माण में अधिक से अधिक योगदान देने के लिए संकल्प दिलाए गए।

यज्ञ : श्रावणी उपाकर्म के पश्चात् शान्तिकुञ्ज की 27 कुण्डीय यज्ञशाला में हजारों कार्यकर्त्ता, शिविरार्थी साधक भाई-बहिनों ने यज्ञ किया। अखण्ड दीप के निकट गुरु चरण पादुकाओं पर और गुरु स्मारक 'प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा' पर रक्षा सूत्र अर्पित करते हुए सभी ने परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी के आशीर्वाद की कामना की।

रक्षाबंधन : प्रणाम के क्रम में बहिनें श्रद्धेय डॉक्टर प्रणव पण्ड्या जी को राखी बाँधते हुए और भाई श्रद्धेया शैल जीजी से रक्षासूत्र प्राप्त करते हुए स्वयं को धन्य अनुभव करते रहे। रक्षासूत्र बंधन का यह क्रम अपराह्नकाल तक चलता रहा। दिनभर रक्षाबंधन के पावन गीतों से सभी के मन में पर्व का उल्लास छाया रहा।

दीपयज्ञ : सायंकाल ब्रह्मवादिनी बहिनों द्वारा विशेष दीपयज्ञ का आयोजन किया गया।

वृक्षारोपण : श्रावणी पर्व के पावन अवसर पर शान्तिकुञ्ज आए साधकों ने उद्यान विभाग से तरु प्रसाद ग्रहण किया। एक हजार से अधिक पौधे निःशुल्क वितरित किए गए।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्वोत्सव ने उकेरी सत्प्रवृत्ति संवर्धन एवं दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन की उमंगें

गायत्री तीर्थ शान्तिकुञ्ज में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का उत्सव धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर भगवान श्रीकृष्ण की भव्य झाँकी सजाई गयी थी। श्रद्धालुओं ने विधि विधान से पूजा अर्चना की। सम्पूर्ण कार्यक्रम में भगवान श्रीकृष्ण के प्रति श्रद्धा और भक्ति का सुंदर समन्वय किया गया था।

बाल गोपाल के दर्शन, नमन, वंदन करने सबके प्रिय युवा आदर्श आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी भी सपत्नीक कार्यक्रम में उपस्थित हुए। उन्होंने अपने संदेश में कहा कि श्रीकृष्ण की बाल्यावस्था ही नहीं, उनका सम्पूर्ण जीवन ही अन्याय का प्रतिकार और न्याय की रक्षा करने में बीता था। श्रीकृष्ण ने कभी भी किसी प्रलोभन या भय के वशीभूत होकर अन्याय के सम्मुख सिर नहीं झुकाया, वरन उसके विरुद्ध डटकर लड़े और अन्याय व अत्याचार को मिटाया। भगवान श्रीकृष्ण ने राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, कला संबंधी सभी क्षेत्रों में कार्य किया और लोगों को असत मार्ग से हटाकर सन्मार्ग पर चलाया।

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया शैल जीजी ने सभी को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी की शुभकामनाएँ दी। उन्होंने कहा कि योगेश्वर श्रीकृष्ण की ही तरह परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी की शक्तियाँ और उनका दिव्य संरक्षण हमारे साथ है। श्रीकृष्ण के साथी, सखाओं की तरह हमें भी अवांछनीयताओं और अनाचारों से संघर्ष के लिए साहसपूर्वक आगे आना चाहिए।

श्री श्याम बिहारी दुबे जी ने विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से जनमानस को राक्षसी प्रवृत्तियों से दूर रहने के उपाय सुझाये। उन्होंने कहा कि दुष्प्रवृत्तियाँ मानव जीवन को खोखला कर देती हैं। संगीत विभाग के युगगायकों ने श्रीकृष्ण के भजन एवं गीत प्रस्तुत कर श्रोताओं की श्रद्धा और भक्तिभाव को प्रेरक उछाल दी।

शान्तिकुञ्ज के सत्संग भवन में मनाए गए जन्माष्टमी उत्सव में उमंग और उल्लास के साथ भाग लेते भक्तगण

गायत्री विद्यापीठ के नौनिहालों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। इस अवसर पर गायत्री विद्यापीठ व्यवस्था मण्डल की प्रमुख आदरणीया शेफाली पण्ड्या जी ने छात्र-छात्राओं का उत्साहवर्धन किया।

शान्तिकुञ्ज के व्यवस्थापक नियुक्त हुए आदरणीय श्री योगेन्द्र गिरि जी

अत्यंत सरल स्वभाव के मृदुभाषी, मिलनसार शान्तिकुञ्ज के जीवनदानी कार्यकर्त्ता आदरणीय श्री योगेन्द्र गिरि जी शान्तिकुञ्ज के नए व्यवस्थापक नियुक्त किए गए हैं। दिनांक 1 सितम्बर 2024 को निवर्तमान व्यवस्थापक आदरणीय श्री महेन्द्र शर्मा जी से उन्होंने यह कार्यभार ग्रहण किया है।

श्री योगेन्द्र गिरि जी एक कर्मठ कार्यकर्त्ता और कुशल संगठक हैं। वे मध्य प्रदेश के जल संसाधन विभाग में वरिष्ठ अधिकारी थे। श्रद्धेय डॉ. प्रणव जी के आह्वान पर चार वर्ष पूर्व ही स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति लेकर वे सन् 2016 में स्थायी रूप से शान्तिकुञ्ज आ गए थे। इससे पूर्व उन्होंने शान्तिकुञ्ज में शक्तिपीठ प्रकोष्ठ, मध्य जोन, पूर्वीजोन, देव संस्कृति विश्वविद्यालय में विशेषज्ञ प्राध्यापक तथा देसंविवि के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी के निजी सहायक रूप में बड़ी महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारियाँ सँभाली हैं।

श्रद्धेय डॉ. साहब, श्रद्धेया शैल जीजी एवं आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने श्री योगेन्द्र गिरि जी को बड़े दायित्व सौंपते हुए आशा व्यक्त की कि उनके कुशल मार्गदर्शन में मिशन नई ऊँचाइयाँ प्राप्त करेगा। शान्तिकुञ्ज के निवर्तमान व्यवस्थापक आदरणीय श्री महेन्द्र शर्मा जी, पूर्व व्यवस्थापक श्री शिव प्रसाद मिश्रा जी सहित समस्त शान्तिकुञ्ज परिवार ने उन्हें अपने पूरे सहयोग का आश्वासन देते हुए हार्दिक शुभकामनाएँ दीं।

युगतीर्थ के प्रति बढ़ती युगसृजेता युवाओं की आस्था

'संभवम आईएएस' के 300 छात्रों ने की शान्तिकुञ्ज की यात्रा

दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी

दिया, दिल्ली भारत के भावी कर्णधारों के व्यक्तित्व विकास के लिए समर्पित है। यह अपने 'संभवम आईएएस' कार्यक्रम के अंतर्गत दिल्ली में सिविल सेवाओं की तैयारी कर रहे विद्यार्थियों को निःशुल्क कोचिंग प्रदान करता है। गायत्री परिवार की युवा शाखा अन्य कोचिंग कक्षाओं की तरह उन्हें विद्वान शिक्षकों के माध्यम से प्रोफेशनल मार्गदर्शन तो प्रदान करती ही है, इसके अलावा विद्यार्थियों के तनाव प्रबंधन, मनोबल संवर्धन के लिए भी विशेष प्रयास किए जाते हैं, जो विद्यार्थियों में नई ऊर्जा, नया विश्वास जगाते हैं। इस क्रम में विद्यार्थियों को समग्र जीवन दर्शन, ध्यान, योग तथा समाजसेवा के कार्यों में जुड़ने के लिए प्रेरित किया जाता है।

संभवम आईएएस के सौजन्य से हर वर्ष युवाओं को कायाकल्प यात्रा के लिए शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार लाया जाता है। इस वर्ष अगस्त माह में दिल्ली, महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु, छत्तीसगढ़ आदि प्रांतों से संबंध रखने वाले 300 से अधिक युवा कायाकल्प यात्रा के तीन दिवसीय प्रवास में शान्तिकुञ्ज आए। इनमें लगभग 70% छात्र 'संभवम आईएएस' कार्यक्रम से जुड़े थे। इसमें सिख और मुस्लिम जैसे विविध धर्म, समुदायों के लोग भी शामिल थे।

कायाकल्प यात्रा 2024 में आए अधिकांश युवा पहली बार शान्तिकुञ्ज आए थे। वे यहाँ के दिव्य वातावरण और सच्ची आध्यात्मिकता से बहुत प्रभावित हुए। यहाँ हुए विचार मंथन ने जीवन के प्रति दृष्टिकोण और लक्ष्यों के बारे में नई अवधारणा को जन्म दिया। अधिकांश ने गायत्री का ध्यान, जप और स्वाध्याय शुरू करने का संकल्प लिया। कुछ लोगों ने दीक्षा भी ली।

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी, युवा प्रकोष्ठ प्रभारी श्री के.पी. दुबे तथा शान्तिकुञ्ज के विद्वान वक्ताओं, युगगायकों एवं ई.एम.डी. की टीम ने उनकी विचारधारा को प्रखर, परिष्कृत करने में बहुमूल्य योगदान दिया, जिसके प्रति यात्रा समन्वयकों और लाभार्थी युवाओं ने अपनी कृतज्ञता व्यक्त की।

ऋषियुग्म के स्मारकों के समाधि स्थल पर ध्यान करते विभिन्न प्रशासनिक सेवा परीक्षाओं के विद्यार्थी

मुम्बई से युवाओं का 100 सदस्यीय दल शान्तिकुञ्ज आया

अश्वमेध महायज्ञ मुम्बई से विशेष रूप से प्रभावित मुम्बई के 100 से अधिक युवाओं का एक दल शान्तिकुञ्ज तीर्थ सेवन के लिए आया। अपने दो दिवसीय प्रवास में दल के सदस्यों ने परम पूज्य गुरुदेव के विचार, भारतीय संस्कृति एवं वैज्ञानिक आध्यात्मवाद के प्रायोगिक तथ्यों पर ज्ञानार्जन किया। देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी से भेंट वार्ता विशेष ज्ञानवर्धक एवं उत्साहवर्धक रही। दल के सदस्यों ने उनके समक्ष जीवन प्रबंधन संबंधी जिज्ञासाएँ प्रस्तुत कीं और समाधान पाकर तृप्त हुए।

युवा प्रकोष्ठ प्रभारी श्री के.पी. दुबे एवं श्री आशीष सिंह के मार्गदर्शन में दो दिवसीय प्रतिभा परिष्कार सत्र सम्पन्न हुआ। गंगा तट पर ध्यान करना विशेष आह्लादकारी था। सभी ने गायत्री परिवार की गतिविधियों से जुड़ने के संकल्प के साथ गुरुधाम में गुरु दीक्षा ली। शान्तिकुञ्ज की सकारात्मक ऊर्जा और शांतिपूर्ण वातावरण से सभी प्रभावित हुए।

ऋषियुग्म के स्मारकों के संग स्मृतियाँ सँजोते और आदरणीय डॉ. चिन्मय जी से अपनी जिज्ञासाओं का समाधान प्राप्त करते हुए मुम्बई से आए युवा

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) गायत्री नगर, श्रीरामपुरम, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा उत्तर भारत लाइव, एच.सी.एल. कम्पाउण्ड, सहारनपुर रोड़, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित। **संपादक**- प्रमोद शर्मा। **पता** :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602

सम्पर्क सूत्र : पंजीयन एवं पूछताछ
फोन : 01334-311004
ईमेल : pragyaabhiyan@awgp.in
समाचार भेजने के लिए
ई-मेल : news@awgp.org

Publication date: 12.09.2024
Place: Shantikunj, Haridwar
RNI-NO.38653/ 1980
Postel R.No. UA/DO/DDN/ 16 / 2024-26
Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2024-26